Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ
وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ
وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا

(सूरत मायदा : 4)

अनुवाद : आज के दिन मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्मे पूर्ण कर दिया और तुम पर मैंने अपनी नेमत पूर्ण कर दी हैं और मैं ने इस्लाम को तुम्हारे लिए दीन के तौर पर पसंद कर लिया है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 6
अंक- 17

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

16 रमज़ान 1442 हिज्री कमरी 29 शहादत 1400 हिज्री शम्सी 29 अप्रैल 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

(1237) हज़रत अबू ज़र (ग़फ़्फ़ारी) रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया मेरे रब की ओर से एक आने वाला मेरे पास आया और उसने मुझे बताया आपने फ़रमाया उसने मुझे खुशखबरी दी कि जो मेरी उम्मत से ऐसी हालत में मरे कि वह अल्लाह तआला के साथ किसी चीज़ को भी शरीक नहीं ठहराता तो वह जन्नत में दाख़िल होगा।

(1238) हज़रत अब्दुल्लाह (बिन मसऊद) रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो अल्लाह का किसी को शरीक ठहराते हुए मरेगा वह आग में दाख़िल होगा और मैं (अर्थात अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु) कहता हूँ : जो व्यक्ति ऐसी हालत में मरे कि वह किसी को भी अल्लाह तआला का शरीक न ठहराता हो तो जन्नत में दाख़िल होगा।

(1239) हज़रत बरा (बिन आज़िब) रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सात बातें करने का हुक्म दिया और सात ही बातों से हमें रोका। हमें हुक्म दिया कि हम जनाज़ों के साथ जाया करें, बीमार की अयादत करें, दावत देने वाले की दावत क़बूल करें, मज़लूम की मदद करें, कसम को पूरा करें, सलाम का जवाब दिया करें, छींकने वाले को दुआ दें और चांदी के बर्तन, सोने की अँगूठी, रेशमी कपड़े और दीबाज और कसी और इस्तबराक़ (बहुत बढ़िया रेशमी कपड़ा) (पहनने) से हमें मना फ़रमाया है।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताब अल् जनायज़, प्रकाशन क़ादियान 2006)

अरबी भाषा सीखें क्योंकि अरबी भाषा के बिना कुरआन का मज़ा नहीं आता।
आदमी के लिए अनिवार्य है कि तौबः तथा इस्तिग़फार में लगा रहे और देखता रहे कि ऐसा न हो, बुरे कर्म सीमा से गुज़र जाएं और ख़ुदा तआला के क्रोध को खींच लाएं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

25 जून 1899 ई

साहिबज़ादा मिर्ज़ा मुबारक अहमद का अक़ीक़ा

साहिबज़ादा मुबारक अहमद साहिब के अक़ीक़ा के लिए 25 जून इतवार का दिन निर्धारित था। हज़रत अक़दस ने इस काम का प्रबन्ध मुंशी नबी बख़्श साहिब के सपुर्द किया था, परन्तु उस दिन क्योंकि बारिश थी और हवा बहुत ठण्डी चल रही थी और बादल की कारण से अन्धेरा भी था ये सब सामान हम लोगों के लिए अफ़साना ख़्वाब हो गया हज़रत भी सो गए और प्रबन्धक साहिब भी अपने बसेरे में जा लेटे। दिन ख़ूब चढ़ गया हज़रत उठे और पूछा कि अक़ीक़ा का कोई सामान नज़र नहीं आता। गांव के लोगों को दावत की गई थी और बाहर से भी कुछ लोग पधारे थे। हज़रत को चिन्ता हुई कि मेहमानों को अकारण ही कष्ट हुआ। उधर हमारे दोस्त नबी बख़्श साहिब बड़े परेशान और लज्जित थे कि हुज़ूर के समक्ष मैं क्या बहाना करूँ। मुंशी साहिब हाज़िर हुए और क्षमा चाही। ख़ैर दयालु इन्सान और रहीम मार्गदर्शक उसकी ज़ात में कठोरता और सख़्त आलोचना तो है ही नहीं। फ़रमाया अच्छा فُعِلَ مَا قُدِّرَ परन्तु हमारे दोस्त मुंशी साहिब को धैर्य कहाँ। यह दिल ही दिल में कुढ़ें और लज्जित हों और दौड़े जाएं। उन के इस हाल को देख कर हज़रत अक़दस को अपनी एक रोया याद आ गई जो चौदह साल हुए देखी थी। जिसका विषय यह है कि एक चौथा बेटा होगा और इस का अक़ीक़ा सोमवार को होगा।

ख़ुदा तआला की बात के पूरा होने और अल्लाह तआला के इस अदभुत सामर्थ्य से हज़रत अक़दस को जो ख़ुशी हुई उसने सारे अपमान और सामान के न होने की परेशानी को दूर कर दिया। और दूसरे दिन सोमवार को जब हम सब ख़ुद्दाम घर के भीतरी सेहन में बैठे थे और साहिबज़ादा मुबारक अहमद साहिब का सिर मूंडा जा रहा था। हज़रत अक़दस ने किस जोश से यह रोया सुनाई।

30 जून 1899 ई

रात को मौसम की बीमारियों का वर्णन हुआ। फ़रमाया "यहा दिन बरसात के प्राय ख़तरनाक हुआ करते हैं। भारत के वैद्य कहते हैं कि इन तीन महीनों में जो बच रहे, वह मानो नए सिरे से पैदा होता है।" फिर फ़रमाया। "यह सर्दी भी ख़ौफ़नाक ही नज़र आती है।" फ़रमाया। "वैद्य बड़े बड़े परहेज़ों और सुरक्षा के लिए सावधानियां बताते हैं; यद्यपि माध्यमों सिलसिला और उन की रियाइत ठीक है, परन्तु मैं कहता हूँ कि सीमित

शेष पृष्ठ 11 पर

बाइबल की रिवायत पर क़ुरआन-ए-करीम पर आपत्ति आश्चर्य की बात है, हम निःसंदेह बाइबल की कुछ रिवायत को तारीख़ी गवाही के तौर पर उल्लेख करते हैं लेकिन उसी वक़्त जबकि वह अक़्ल और दूसरी तारीख़ या क़ुरआन-ए-करीम के अनुसार हो

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत युसूफ आयत नम्बर 81की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

كَبِيْرُهُم जिस भाई के सम्बन्ध में आया है मालूम होता है उस के दिल में किसी क़दर अल्लाह का भय था। क्योंकि एक तो वह अपने बाप से ग़द्दारी करने से भाईयों को डराता है दूसरे अपने वादे की पाबंदी पर डटा हुआ है कि जब तक मेरा बाप आज्ञा न दे या ख़ुदा तआला ही कोई निर्णय कर दे मैं यहां से नहीं जाऊँगा। ख़ुदा तआला के फ़ैसला से मुराद हो सकता है कि उस के दिल में यह हो कि किसी तरह बिन यामीन आज़ाद हो जाएं और मैं उनको साथ लेकर वापिस चला जाऊं।

हज़रत-ए-यूसुफ़ के सबसे बड़े भाई का नाम रोबिन था और बाइबल के अनुसार जिस भाई ने इस अवसर पर घर वापिस जाने से इंकार किया है वह यहूदा थे जो भाईयों में से चौथे दर्जा पर थे। मसीही लेखक इस जगह आपत्ति करते हैं कि क़ुरआन के लेखक को इतिहास का भी ज्ञान नहीं। वे यहूदा की बात को रोबिन की तरफ़ मंसूब कर रहा है। मुझे मसीही लेखकों के ऐसी आपत्तिों पर हमेशा आश्चर्य हुआ करता है। वे इस प्रकार बाइबल का वर्णन करते हैं इसलिए वे सबसे ज़्यादा प्रमाणित इतिहास की पुस्तक है। जबकि ख़ुद मसीही लिटरेचर इन तर्कों से भरा पड़ा है जो इतिहासिक रूप से बाइबल के पद को बहुत गिरा देते हैं। पुरानी तारीख़ तो अलग रही मूसा अलैहिस्सलाम की

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-9)

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का अख़बार DIE ZEIT को इंटरव्यू

हमारे रिकार्ड के अनुसार 67 प्रतिशत Bachlor कर रहे हैं 19 प्रतिशत Master कर रहे हैं, 10 प्रतिशत State Examination कर रहे हैं 2.4 प्रतिशत PhD कर रहे हैं और 1.1 प्रतिशत Diploma कर रहे हैं।

अहमदिया मुस्लिम स्टूडैंटस असोसिएशन जर्मनी के विभित्न 26 यूनीवर्सिटीज़ से निरंतर सम्पर्क में है और उन राबतों के अधीन इन यूनीवर्सिटीज़ में विभिन्न प्रोग्रामज़ आयोजित करवाती है

यूनीवर्सिटी में तब्लीग़ी प्रोग्राम भी आयोजित किए जाते हैं और अहमदी विद्यार्थी के माध्यम से विभिन्न विषयों पर प्रोग्राम और बैठकें आयोजित होती हैं।
अब तक Marburg, Hamburg, Frankfurt की यूनीवर्सिटीयों में तीन प्रोग्रामज़ हो चुके हैं और Hamburg, Heidelberg की यूनीवर्सिटीयों में दो प्रोग्रामज़ अगले महीने आयोजित होंगे।

आदरणीय नादिर अहमद संधू साहिब जो कि मैडीकल के स्टूडैंट हैं उन्हों ने दिल की बीमारीयों के बारे में अपनी खोज प्रस्तुत की
दिल की बीमारीयों के हवाला से दो ऐसे प्रोटीनज़ को देखा गया है जिनके बारे में विचार है कि उनका दिल की बीमारीयों के आरंभ में बहुत महत्वपूर्ण किरदार है। इन का नाम MIF और SDF-1है

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

29 मई शनिवार के दिन 2015

फ़ैमिली मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार छः बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे और फ़ैमिलीज़ और इन्फ़िरादी लोगों की मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ।

आज शाम के इस सैशन में 45 फ़ैमिलीज़ के 137 लोग और 27 लोग ने इन्फ़िरादी तौर पर, इस तरह संपूर्णता 164 लोग ने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन सभी फ़ैमिलीज़ और लोगों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य भी पाया।

आज मुलाक़ात का सौभाग्य पाने वालों में फ्रैंकफ़र्ट की जमाअत से आने वाली फ़ैमिलीज़ और लोगों के अतिरिक्त विभिन्न जमाअतों

KOLN, MARBURG, STADE, TRIER, BOCHOLT, HATTERSHEIM, AALEN, AHAUS, FRIEDBERG, FREINSHEIM, NEUFAHRN, WALDSHUT, VIERSEN, KREUZNACH, ERFURT

ओसना बर्ग, म्यूनख़, कासल, कोबल नज़ावर वेज़ बादिन से आने वाली फ़ैमिलीज़ और लोगों शामिल थे। इन सभी ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया और प्रत्येक बाबरकत लमहात से बरकतें समेटते हुए बाहर आए। बीमारों ने अपनी सेहतयाबी के लिए दुआएं प्राप्त कीं। विभिन्न परेशानीयों और समस्याओं में घिरे हुए लोगों ने अपनी तकालीफ़ दूर होने के लिए दुआ की दरख़ास्तें कीं और संतुष्टि पा कर मुस्कुराते हुए चेहरों के साथ बाहर निकले। कुछ लोगों ने अपने कारोबार और विभिन्न मुआमलात के लिए रहनुमाई ली ।

विद्यार्थी ने तालीमी मैदान और परीक्षा में सफ़लता की प्राप्ति के लिए अपने प्यारे आक़ा से दुआएं प्राप्त कीं। उद्देश्य प्रत्येक ने अपने प्यारे आक़ा की दुआओं से हिस्सा पाया। देखने की प्यास बुझी और ये कुछ मुबारक क्षण उन्हें हमेशा के लिए सेराब कर गए।

पाकिस्तान से आने वाली एक फ़ैमिली जब मुलाक़ात करके दफ़्तर से बाहर आई तो उनकी आँखें आँसुओं से भरी हुई थीं और महिला निरन्तर रो रही थीं। कहने लगीं की जब से होश सँभाला है हमने हुज़ूर को टीवी पर ही देखा है। आज अपने जीवन में पहली बार अपने सामने इतने क़रीब से देखा है। ये कुछ क्षण मेरे लिए वर्णन करने की सीमा से बाहर हैं कि मैं इतनी सौभाग्यशाली हूँ कि हुज़ूर अनवर को देख लिया है और कुछ क्षण हुज़ूर अनवर के पास बैठेने के प्राप्त हुए हैं। अल्लाह यह सौभाग्य इस फ़ैमिली के लिए मुबारक करे।

बहुत सौभाग्यशाली हैं वे लोग जिन्होंने अपने प्यारे आक़ा को देखा और फिर क़ुरब के ये कुछ क्षण प्राप्त हो रहे हैं। यह मुबारक क्षण उनके सारे जीवन की पूंजी है। उनका सारी जीवन एक ओर, और ये मुबारक क्षण एक ओर, और इनका कोई बदल नहीं। अल्लाह करे कि हम इन मुबारक लमहात की क़दर और हिफ़ाज़त करने वाले हों। यह केवल हमारे लिए ही नहीं बल्कि हमारी भविष्य की नस्लों के लिए भी पूंजी हैं। इन लमहात की बरकतों से हमारी नस्लें भी हिस्सा पाएँगी और सफ़ल होंगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों और बच्चीयों को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों और बच्चीयों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम पौने नौ बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

आमीन का समारोह

9 बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में पधारे और प्रोग्राम के अनुसार आमीन का समारोह आयोजित हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने पच्चीस बच्चों और बच्चीयों से क़ुरआन-ए-मजीद की एक-एक आयत सुनी और अंत में अमीन करवाई।

निमंलिखित ख़ुशनसीब बच्चों और बच्चीयों ने आमीन के समारोह में शमूलीयत का सौभाग्य पाया।

शुमायल अहमद मुनीर, फ़राज़ अहमद मीर, अदील अहमद, नूरेज़ अली मंज़ूर, जलीस अहमद ज़फ़र, जाज़िब अहमद ज़फ़र, ज़ैन मुज़फ़्फ़र, कामरान अज़हर काहलों, अहमद रहमान, आज़िद शहज़ाद शेख़, ज़ीशान उमर, सय्यद सफ़ीर अहमद, उसमान महमूद, अली सुफ़ियान चौधरी, आशिर अहमद नासिर, आफ़्रा सियाब नसीम।

आतिका अहमद, मदीहा अतहर, रानिया अहमद, लायबा मलिक, मशाल ऐवान, सजल ख़ान, आफ़ीया चौधरी, अतीया मिलही, सुफ़रा नासिर।

आमीन के समारोह में हिस्सा लेने वाले ये बच्चे जर्मनी की विभिन्न जमाअतों DARMSTADT, DIETZENBACH, RIEDSTADT, और TAUNUS से आए थे।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अबू अब्दुल्लाह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ..... मेरे सहाबा में से आचरण के लिहाज़ से मुझ से सबसे ज़्यादा समानता रखते हैं (हदीस)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा र्राशिद दो नूरों वाले हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं का वर्णन।

मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बढ़ोतरी के बारे में विभिन्न रिवायत का विस्तृत वर्णन।

मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा में से बात को मुकम्मल और ख़ूबसूरत रूप में वर्णन करने में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से बेहतर किसी को नहीं देखा जबकि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ज़यादा बातचीत से बचा करते थे।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैंने अपने प्रतापी रब से यह दुआ मांगी है कि वह किसी ऐसे व्यक्ति को आग में दाख़िल न करे जो मेरा दामाद हो या जिसका मैं दामाद हूँ।

चार मरहूमीन मुबश्शिर अहमद रिंद साहिब, इब्न अहमद बख़्श साहिब मुअल्लिम वक़्फ़-ए-जदीद, आदरणीय मुनीर अहमद फ़ख़्र साहिब पूर्व अमीर जमाअत इस्लामाबाद (पाकिस्तान),

ब्रिगेडियर रिटायर्ड मुहम्मद लतीफ़ साहिब साबिक़ अमीर ज़िला रावलपिंडी और आदरणीय कौनोक ओम्रो बेकूफ़ साहिब आफ़ किर्गिज़स्तान की विशेषताओं का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 19 मार्च 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन चल रहा था। उनकी गवाही के बाद की घटना, गवाही के बाद के दिनों के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी कुछ में लिखा है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु लखते हैं कि अब मदीना उन्ही लोगों के कब्ज़े में रह गया और उन दिनों में इन लोगों ने जो हरकात कीं वे निहायत हैरत-अंगेज़ हैं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद तो कर चुके थे। उनकी नाश के दफ़न करने पर भी उनको आपत्ति हुई और तीन दिन तक आप को दफ़न नहीं किया जा सका। अंततः सहाबा की एक जमाअत ने हिम्मत कर के रात के वक़्त आप रज़ियल्लाहु अन्हु को दफ़न किया। इन लोगों के रास्तों में भी उन्होंने रोकें डालीं लेकिन कुछ लोगों ने सख़्ती से मुक़ाबला करने की धमकी दी तो दब गए।

(उद्धरित इस्लाम में इख़तेलाफ़ात का आग़ाज़, अनवारुल ऊलूम भाग 4 पृष्ठ 333)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के विषय में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भविष्यवाणी फ़रमाई थीं। उनका वर्णन इस तरह मिलता है। हज़रत अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक उद्यान में दाख़िल हुए और मुझे उद्यान के दरवाज़े पर पहरा देने का हुक्म फ़रमाया। इतने में एक व्यक्ति आया और अंदर आने की आज्ञा मांगी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उसे अंदर आने दो और उसे जन्नत की खुशखबरी दो तो क्या देखता हूँ कि वह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। फिर एक और व्यक्ति आया और आज्ञा मांगी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उसे आने दो और उसे जन्नत की खुशखबरी दो तो क्या देखता हूँ कि वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। फिर एक और व्यक्ति आया और आज्ञा मांगी इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम थोड़ी देर ख़ामोश रहे और फिर फ़रमाया उसे आने दो और उसे जन्नत की खुशखबरी दो जबकि एक बड़ी मुसीबत उसे पहुँचेगी तो क्या देखता हूँ कि वह हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(सही बुखारी किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी(सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) बाब मनाक़िब उस्मान बिन अफ़्फ़ान...हदीस 3695)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ओहद पर चढ़े जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु थे। ओहद पहाड़ हिलने लगा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ओहद ठहर जा। रावी कहते हैं कि मेरा ख़्याल है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस पर अपना पांव भी मारा और फ़रमाया तुम पर एक नबी और एक सिद्दीक़ और दो शहीद हैं।

(सही बुखारी किताब फ़ज़ायल अशबुन्न नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) बाब मनाक़िब उस्मान बिन अफ़्फ़ान ... हदीस 3699)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक उपद्रव का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि यह व्यक्ति उस उपद्रव में उत्पीड़न की अवस्था में मारा जाएगा। यह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर संकते करते हुए फ़रमाया। (सुंन अल्तिर्मेज़ी अबवाब मनाकिब बाब قولهم كنا نقول ابوبكروعمروعثمان हदीस नंबर 3708)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो विरासत छोड़ी थी उसके बारे में जो वर्णन मिलता है वह यह है। अबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन अतबा वर्णन करते हैं कि जिस दिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद किए गए उस दिन आप रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ज़ानची के पास आप के तीन करोड़ पाँच लाख दिरहम और डेढ़ लाख दीनार पड़े थे। वे सब लूट लिए गए। तथा आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने रब्ज़ाह स्थान पर एक हज़ार ऊंट छोड़े हुए थे। रब्ज़ाह हिजाज़ के रस्ता में मदीना से तीन दिन की दूरी पर स्थित एक गाँव है। इसी तरह बरादीस और ख़ैबर और वादी कुरा में दो लाख दीनार के सदक़ात छोड़े जिन से आप सदक़ा दिया करते थे।(अल्तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साअद भाग तीन पृष्ठ 42 उस्मान बिन अफ़्फ़ान, दारुल अहया तुर्रास अरबी बेरूत, 1996 ई.) (फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 130 ज़व्वार अकैडमी पब्लिकेशन कराची 2003 ई.)

पहले यह भी वर्णन हो चुका है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं अमीर आदमी था और अब मेरे पास केवल दो ऊंट हैं जो हज के लिए मैंने रखे हुए हैं। (उद्धरित इस्लाम में इख़तेलाफ़ात का आग़ाज़, अनवारुल उलूम भाग 4 पृष्ठ 294)

हो सकता है कि जो बात की जा रही है यह उस वक़्त की हो जब जनता के लाभ के निर्धारित खज़ाने में इस क़दर माल हो जो रावी ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के व्यक्तित्व की ओर सम्बोधित कर दिया है और या यह भी हो सकता है कि उनका व्यक्तिगत भी हो तो अपनी ज़ात पर अब ख़र्च नहीं करते थे बल्कि सदक़ात और

क़ौमी ज़रूरीयात पर ही ख़र्च किया करते थे। बहरहाल एक रिवायत है जो मैंने वर्णन की। इससे पहले उनके अपने हवाले से भी एक रिवायत वर्णन हो चुकी है और खज़ाने की रक्षा के लिए जो आदमी निर्धारित किए थे उन ख़ज़ानचियों से भी यही ज़ाहिर होता है कि वह क़ौमी ख़ज़ाना था जिसकी रक्षा के लिए आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने निर्धारित किया था। (उद्धरित इस्लाम में इख़तेलाफ़ात का आग़ाज़, अनवारुल उलूम भाग 4 पृष्ठ 329)

सहाबा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की गवाही की घटना के बारे में जो वर्णन करते हैं वह इस तरह है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा गया कि आप (रज़ियल्लाहु अन्हु) हमें हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में कुछ बताएं। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया वह तो ऐसा व्यक्ति था जो फरीश्तों में भी दो नूरों वाले कहलाते थे।

(अल्-असाबा फ़ी तमीज़ सहाबा भाग 4 पृष्ठ 378 उस्मान बिन अफ्फ़ान, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2005 ई.)

अल्लाह तआला के नज़दीक भी वह दो नूरों वाले थे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हम में सबसे बढ़ कर दया करने वाले थे। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की गवाही की ख़बर मिली तो उन्होंने फ़रमाया इन लोगों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु को क़तल कर दिया हालाँकि आप रज़ियल्लाहु अन्हु सबसे ज़्यादा दया करने वाले और उन सबसे ज़्यादा रब का संयम धारण करने वाले थे।

(अल्-असाबा फ़ी तमीज़ अल सहाबा भाग 4 पृष्ठ 378 उस्मान बिन अफ्फ़ान, दारुल क़ुतुब इल्मिया 2005 ई.)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अपने दामादों के हक़ में जो दुआ है इसकी भी एक रिवायत मिलती है। "अल्इस्तेयाब" में लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैंने अपने रब से यह दुआ मांगी है कि वह किसी ऐसे व्यक्ति को आग में दाख़िल न करे जो मेरा दामाद हो या जिसका मैं दामाद हूँ।

(अल्इस्तेयाब फ़ी मारेफ़तिल साहाबा भाग तीन पृष्ठ 156 उस्मान बिन अफ्फ़ान, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के लिबास और रूप रंग के बारे में महमूद बिन लबीद वर्णन करते हैं कि उन्होंने हज़रत उस्मान बिन अफ्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु को एक ख़च्चर पर इस हालत में सवार देखा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु के शरीर पर दो पीली चादरें थीं।

हकम बिन सल्त् वर्णन करते हैं कि मेरे पिता ने मुझे बताया कि उन्होंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़िताब करते हुए देखा जबकि आप रज़ियल्लाहु अन्हु पर काले रंग की चादर थी और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेहंदी का रंग लगाया हुआ था। सुलेम अबू आमिर वर्णन करते हैं कि उन्होंने हज़रत उस्मान बिन अफ्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु पर एक यमनी चादर देखी जिसकी क़ीमत सौ दिरहम थी। मुहम्मद बिन उमर वर्णन करते हैं कि मैंने अम्र बिन अब्दुल्लाह, उर्वा बिन ख़ालिद और अब्दुर्रहमान बिन अबू ज़िनाद से हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के रूप रंग इत्यादि के बारे में पूछा। इन सबने बिना मतभेद के कहा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु न छोटे कद थे, न ही बहुत लंबे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु का चेहरा ख़ूबसूरत, चमड़ी नरम, दाढ़ी घन्नी और लंबी, रंग गंदुमी, जोड़ मज़बूत, कंधे चौड़े, सिर के बाल घने थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु दाढ़ी को ख़िज़ाब से पीला करते थे। वाक़िद बिन अबू यासिर वर्णन करते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने दाँतों को सोने की तार से बाँधा हुआ था। मूसा बिन तल्हा वर्णन करते हैं कि मैंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु जुम्मा के दिन बाहर तशरीफ़ लाते तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु पर दो पीली चादरें होतीं। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु मंच पर तशरीफ़ रखते और मुअज़्ज़न अज़ान देता। फिर जब मुअज़्ज़न ख़ामोश हो जाता तो एक टेढ़ी हत्थी वाले डंडे का सहारा ले कर खड़े होते और डंडे हाथ में लिए हुए ख़ुतबा देते। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु मंच से उतरते और मुअज़्ज़न इक़ामत कहता। हुस्न वर्णन करते हैं कि मैंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को मस्जिद में अपनी चादर का तकिया बना कर सोते हुए देखा। (अल्तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साअद भाग तीन पृष्ठ 32 से 34 वर्णन लिबास उस्मान, दारुल अहया तुर्रास अरबी बेरूत 1996 ई.)

मूसा बिन तल्हा वर्णन करते हैं कि जुमा के दिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक डंडे का सहारा लिया हुआ था। आप रज़ियल्लाहु अन्हु समस्त लोगों से ज़्यादा ख़ूबसूरत थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु पर दो पीले रंग के कपड़े होते थे एक चादर और एक तयबंद यहां तक कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु मंच पर आते और उस पर बैठ जाते। (मज्मा ज़वायेद व मम्बा फ़वायद भाग सात पृष्ठ 57 किताब अल् मनाकिब बाब सुफता, हदीस नंबर 14493 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक अँगूठी थी जिस पर मुहम्मद रसूलुल्लाह लिखा हुआ था, कुंदा था। वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम प्रयोग किया करते थे। इसके बारे में रिवायत आती है। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि जब नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने रौम के बादशाह की तरफ़ पत्र लिखने का इरादा फ़रमाया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से निवेदन किया गया कि यदि इस पत्र पर कोई मुहर नहीं लगी हुई होगी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पत्र नहीं पढ़ेंगे। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने चांदी की एक अँगूठी बनवाई जिस पर यह लिखा था "मुहम्मद रसूलुल्लाह" रावी कहते हैं इसलिए मैं अभी भी अँगूठी की सफ़ेदी को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ में देख रहा हूँ। (सही बुखारी किताब अल्-लिबास बाब इत्तेहाज़ खातम ... , हदीस 5875) वह बात मुझे इतनी ताज़ा है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अँगूठी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ में रही। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में रही। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में रही। फिर जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का समय आया तो एक-बार अरीस नाम के कुँवें पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु बीठे थे। रावी कहते हैं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने वह अँगूठी निकाली और उस से खेलने लगे। अर्थात उंगली में फेरने लग गए होंगे तो वह गिर गई। रावी कहते हैं कि हमने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ तीन दिन तक उसे तलाश किया और कुँवें का सारा पानी भी बाहर निकाला लेकिन वह अँगूठी नहीं मिल सकी।

इस अँगूठी के ग़म होने के बाद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे ढूंढ कर लाने वाले को अत्यधिक धन देने का ऐलान किया और इस अँगूठी के गुम होने का आपको बहुत ज़्यादा दुख हुआ। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु उस अँगूठी के मिलने से, उसकी तलाश से मायूस हो गए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने वैसी ही चांदी की एक और अँगूठी बनाने का हुक्म दिया। इसलिए बिल्कुल वैसी ही एक अँगूठी तैयार की गई जिसका नक़्श भी "मुहम्मद रसूलुल्लाह" था। वह अँगूठी आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी वफ़ात तक पहने रखी। आप रज़ियल्लाहु अन्हु की गवाही के वक़्त वह अँगूठी किसी नामालूम व्यक्ति ने ले ली। (सही बुखारी किताबुल-लिबास बाब هَلْ يُجْعَلُ نَقْشُ الخَاتَمِ ثَلاَثَةَ أَسْطُرٍ हदीस 5879) (तारीख़ अल्तिबरी भाग 5 पृष्ठ 111-112 ثم دخلت سنة ثلاثين/ذكر الخبر عن سبب سقوط112 الخاتم... दारुल फ़िकर बेरूत 2002 ई.)

अशर: मुबशर: में भी आप रज़ियल्लाहु अन्हु शामिल थे। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अखनस से मर्वी है कि वह मस्जिद में थे कि एक व्यक्ति ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का बे-अदबी से वर्णन किया। इस पर हज़रत सईद बिन ज़ैद खड़े हो गए और कहा मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्बन्ध में गवाही देता हूँ कि नि:संदेह मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि दस आदमी जन्नत में जाऐंगे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जन्नत में होंगे। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नत में होंगे। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नत में होंगे। उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नत में होंगे। अली रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नत में होंगे। तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नत में होंगे। अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नत में होंगे। ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नत में होंगे। साद बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नत में होंगे और यदि मैं चाहूँ तो दसवें का नाम भी ले सकता हूँ। रावी कहते हैं कि लोगों ने कहा कि दसवाँ कौन है? हज़रत सईद बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हु कुछ देर ख़ामोश रहे। इस पर लोगों ने फिर पूछा कि दसवाँ कौन है? तो उन्होंने कहा सईद बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हु अर्थात मैं ख़ुद हूँ।(सुंन अबी दाऊद किताब सुन्नत बाब फ़ी खुलाफाए हदीस 4649) पहले भी एक जगह पर यह रिवायत उनके सम्बन्ध में वर्णन कर चुका हूँ।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ जन्नत में संगत के बारे में आता है। हज़रत तल्हा बिन उबयदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

हर नबी का एक साथी होता है और मेरा साथी अर्थात जन्नत में मेरा साथी, संगत में उस्मान होगा। (सुंन अल्तिर्मेज़ी अब्वाबुल मनाकिब बाब व रफ़ीकी फ़ी जन्नते उस्मान हदीस 3698)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि एक दफ़ा हम रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ एक घर में मुहाजिरीन के एक गिरोह के साथ थे जिन में अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु, अली रज़ियल्लाहु अन्हु, तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु, ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु, और साद बिन अबी वकास रज़ियल्लाहु अन्हु थे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हर व्यक्ति अपने बराबर वाले के साथ खड़ा हो जाए। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ खड़े हो गए और उनसे गले मिले और फ़रमाया اَنْتَ وَلِيِّ فِي الدُّنْيَا وَ وَلِيِّ فِي الْاٰخِرَةِ कि तुम दुनिया में भी मेरे दोस्त हो और आख़िरत में भी मेरे दोस्त हो।

(मज्मा ज़वायैद व मम्बा फ़ावायैद भाग 9 पृष्ठ 66 किताब मनाकिब बाब मवालात हदीस नंबर 14528 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के आज़ाद किए ग़ुलाम अबू साहला वर्णन करते हैं कि यौमुल दार को अर्थात जिस दिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को उपद्रवियों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में कैद करके शहीद कर दिया था। कहते हैं कि उस दिन मैंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से निवेदन किया हे अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हु! इन उपद्रवियों से लड़ें। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी आप रज़ियल्लाहु अन्हु से निवेदन किया कि हे अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हु इन उपद्रवियों से लड़ें। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अल्लाह की क़सम मैं लड़ाई नहीं करूँगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से एक बात का वादा किया था। अत: मैं चाहता हूँ कि वह पूरा हो। (ओसुदुल ग़ाबा फ़ी मारेफ़तिल सहाबा लेइब्ने असीर भाग 3 पृष्ठ 483-484 उस्मान बिन अफ्फ़ान, दारुल फ़िक्र बेरूत 2003 ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के बदर के युद्ध से पीछे रहने, ओहोद में भागने और बैअत-ए-रिज़वान में शामिल न होने के सम्बन्ध में आपत्ति की जाती है। यह मुनाफ़क़ीन ने भी आप रज़ियल्लाहु अन्हु पर आपत्ति की थी। उस्मान बिन मौहिब वर्णन करते हैं कि मिस्र वालों से एक व्यक्ति हज के लिए आया तो उसने कुछ लोगों को बैठे हुए देखा। उपद्रव पैदा करने के लिए उसने बातें कीं। उसने लोगों से पूछा कि ये कौन लोग हैं? उन्होंने कहा ये क़ुरैशी हैं। उसने पूछा उनमें यह बूढ़ा व्यक्ति कौन है? लोगों ने कहा हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। उसने कहा हे इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आप रज़ियल्लाहु अन्हु से एक बात के सम्बन्ध में पूछता हूँ। आप रज़ियल्लाहु अन्हु मुझे बताएं क्या आप रज़ियल्लाहु अन्हु को इलम है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ओहोद के दिन भाग गए थे? उन्होंने कहा हाँ। फिर उसने पूछा क्या आप रज़ियल्लाहु अन्हु जानते हैं कि वह जंग-ए-बदर से गैरहाज़िर रहे और इस में शामिल नहीं हुए? उन्होंने कहा हाँ। उसने पूछा क्या आप रज़ियल्लाहु अन्हु जानते हैं कि वह बैअत-ए-रिज़वान से भी गैरहाज़िर थे और उस में शामिल नहीं थे? उन्होंने कहा हाँ। इस पर इस व्यक्ति ने ताज्जुब से कहा अल्लाहु-अकबर। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे कहा इधर आओ। तुमने आपत्ति तो की है। मैं तुम्हें हक़ीक़त-ए-हाल खोल कर बताता हूँ। जंग ओहोद के दिन जो उनका भाग जाना था तो मैं यह गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु को माफ़ कर दिया था और आप रज़ियल्लाहु अन्हु से मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाया था। उस वक़्त जब ऐसी हंगामी हालत थी यह प्रसिद्ध हो गया था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को भी काफ़िरों ने शहीद कर दिया है तो उस वक़्त फिर बहरहाल ऐसी हालत थी जो एक वक़्ती बेचैनी के तौर पे आप रज़ियल्लाहु अन्हु चले गए थे। कहते हैं जहां तक बदर से हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का ग़ायब रहना है तो इस का कारण यह था कि हुज़ूर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बेटी जो आप रज़ियल्लाहु अन्हु की पत्नी थीं वह बीमार थीं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया था कि तुम अपनी पत्नी के पास ही रहो। तुम्हारे लिए बदर में शामिल होने वालों की भांति प्रतिफल और माल-ए-ग़नीमत में से हिस्सा होगा। और जहां तक बैअत-ए-रिज़वान से आप रज़ियल्लाहु अन्हु की गैरहाज़िरी है तो याद रखों यदि मक्का की वादी में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से बढ़ कर कोई और व्यक्ति सम्मानित होता तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की जगह उस व्यक्ति को कुफ़्फ़ार की ओर दूत बना कर भेजते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा और बैअत-ए-रिज़वान उस वक़्त हुई जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का वालों की तरफ़ गए हुए थे। बैअत-ए-रिज़वान के वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने दाएं हाथ से अपने बाएं हाथ की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया कि यह उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ है और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने बाएं हाथ को अपने दूसरे हाथ पर-ज़ोर से रखते हुए फ़रमाया यह उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए है। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह वर्णन फ़रमाने के बाद उस व्यक्ति से कहा। अब ये बातें अपने साथ ले जाओ और याद रखना यह कोई आपत्ति की बातें नहीं हैं। जाओ। (उद्धरित सही बुखारी किताबुल फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) बाब मनाक़िब उस्मान नंबर 3698) यह बुख़ारी की रिवायत है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी में मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बढ़ोतरी हुई थी। इस में भी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को हिस्सा लेने की तौफ़ीक़ मिली। अबू मलीह अपने पिता से रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मस्जिद मदीना की बढ़ोतरी के लिए ज़मीन के एक टुकड़े के मालिक को जो एक अंसारी था फ़रमाया तुम्हारे लिए इस ज़मीन के टुकड़े के बदले जन्नत में घर होगा परन्तु उसने देने से इन्कार कर दिया। इस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु आए और उस व्यक्ति से कहा कि तुम्हारे लिए इस टुकड़े के बदले, इस टुकड़ा ज़मीन के बदले में दस हज़ार दिरहम देता हूँ। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उससे वह टुकड़ा ज़मीन का ख़रीद लिया। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आए और निवेदन की हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ! आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझ से ज़मीन का यह टुकड़ा ख़रीदें जो मैंने अंसारी से ख़रीदा है। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वह ज़मीन का टुकड़ा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से जन्नत में घर के बदले ख़रीद लिया। वही बात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाया कि तुम्हारा जन्नत में घर होगा। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने बताया कि मैंने दस हज़ार दिरहम के बदले में उसे ख़रीद लिया है। इसके बाद नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक ईंट रखी। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया तो उन्होंने भी एक ईंट रखी। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया उन्होंने भी एक ईंट रखी। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु आए और उन्होंने भी एक ईंट रखी। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बाक़ी लोगों से फ़रमाया कि अब तुम सब ईंटें रखो तो उन सबने रखी।(मज्मा ज़वायैद भाग 9 पृष्ठ 65 किताबुल मनाकिब बाब मा अमल मिन खैर ... हदीस नंबर 14524 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.) यह जो उस का एक्सटेंशन (extension) हुआ था तो इस तरह उस की बुनियाद पड़ी।

सुमाम: बिन हज़न कुशैरी वर्णन करते हैं कि मैं मुहासिरे के वक़्त हाज़िर था जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने झांक कर लोगों से फ़रमाया। जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर का मुहासिरा किया गया था तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : तुम्हें अल्लाह और इस्लाम की क़सम देकर पूछता हूँ क्या तुम जानते हो कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो रूमा नामी कुएँ के अतिरिक्त मीठे पानी का कोई इंतिज़ाम नहीं था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कौन है जो रूमा कुएँ को ख़रीदेगा ताकि वह इस में अपना डोल मुस्लमानों के डोल के साथ डाले। अर्थात वह ख़ुद भी पिए और मुस्लमान भी इस से पियें और जन्नत में उसके लिए इस से बेहतर बदला होगा। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि इस पर मैंने वह कुआँ अपने ज़ाती माल से ख़रीदा और इस में अपना डोल मुस्लमानों के डोलों के साथ डाला और आज तुम मुझे इस से पानी पीने से रोकते हो और चाहते हो कि मैं समुंद्र का पानी पीने पर मजबूर हो जाऊं। इस पर लोगों ने कहा अल्लाह की क़सम! आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उचित फ़रमाया है। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मैं तुम्हें अल्लाह और इस्लाम की क़सम देकर पूछता हूँ क्या तुम जानते हो कि मैंने जैशे उस्रा, तबूक के युद्ध के लश्कर की तैयारी अपने माल से की थी। इस पर लोगों ने कहा अल्लाह की क़सम ऐसे ही है। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मैं तुम्हें अल्लाह और इस्लाम की क़सम देकर पूछता हूँ क्या तुम जानते हो कि यह मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जब नमाज़ियों के लिए तंग हो गई तो रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो व्यक्ति अमुक ख़ानदान से ज़मीन का यह टुकड़ा ख़रीद कर मस्जिद में शामिल कर देगा तो उसके लिए जन्नत में इस से बेहतर होगा। इसलिए मैं ने ज़मीन का यह टुकड़ा अपने ज़ाती माल से ख़रीद कर मस्जिद में शामिल कर दिया और अब तुम लोग मुझे इस मस्जिद में दो रकात नमाज़ पढ़ने से भी रोक रहे हो। इस पर उन लोगों ने कहा अल्लाह की क़सम ऐसा ही है। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मैं तुम्हें अल्लाह और इस्लाम की क़सम देकर पूछता हूँ क्या तुम जानते हो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का के सबीर नामी पहाड़ी पर थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और मैं था। जब पहाड़ी कांपी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस पर अपना पांव मारते हुए फ़रमाया हे सबीर! ठहर जा क्योंकि तुझ पर एक नबी और एक सिद्दीक़ और दो शहीद हैं। इस पर उन लोगों ने कहा अल्लाह की क़सम ऐसा ही है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अल्लाहु-अकबर रब-ए-काअबा की क़सम उन लोगों ने मेरे हक़ में यह गवाही दे दी है अर्थात यह कि मैं शहादत का स्थान पाने वाला हूँ। (सुंन निसाई किताब अल्हिबास बाब वक़्फ़ मसाजिद हदीस नंबर 3638)

मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की और बढ़ोतरी जो हुई वह ज़्यादा-तर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में हुई थी। इसलिए उस का संक्षेप इतिहास और इबतिदाई हालात और फिर बढ़ोतरी के बारे में जो भी वर्णन है वह बताता हूँ। पहले तो यह वर्णन किया गया है नाँ कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में बढ़ोतरी की गई। इसके बारे में एक नोट यह भी है कि रबीउल अव्वल के महीने में प्रथम हिज्री के अनुसार अक्तूबर 622 ई. के अन्त में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने दस्त-ए-मुबारक से मस्जिद-ए-नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नीव रखी। बुनियाद तक़रीबन तीन ज़रा अर्थात डेढ़ मीटर गेहरी थी। बुनियाद के लिए पत्थर से घड़ी हुई ईंटों से दीवार बनाई गई जबकि ऊपर की दीवार गारे से बनी और धूप में सुखाई गई कच्ची ईंटों से बनाई गई थी और धूप में सुखाई गई। दीवार कच्ची ईंटों से बनाई गई थी।

(उद्धरित जुस्तजू-ए-मदीना अज़ अब्दुल हमीद कादरी पृष्ठ 430 ओरीएंटल पब्ली केशन्ज़् पाकिस्तान 2007 ई.)

यह मस्जिद की तामीर की तारीख़ है। साथ-साथ इस में बढ़ोतरी का भी वर्णन आ जाएगा। मस्जिद की दीवारें तक़रीबन पौने मीटर, तक़रीबन दो अढ़ाई फुट चौड़ी रखी गई थीं, जिनकी ऊंचाई तक़रीबन सात ज़रा अर्थात तक़रीबन साढ़े तीन मीटर थी।

(उद्धरित जुस्तजू-ए-मदीना अज़ अब्दुल हमीद कादरी पृष्ठ 432 ओरीएंटल पब्ली केशन्ज़् पाकिस्तान 2007 ई.)

मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तकमील शवाल के महीने की 1 हिज्री, अप्रैल 623 ई. में हुई।

(उद्धरित जुस्तजूए मदीना अज़ अब्दुल हमीद कादरी पृष्ठ 435 ओरीएंटल पब्ली केशन्ज़् पाकिस्तान 2007 ई.)

हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी मस्जिद की लम्बाई सत्तर ज़रा, तक़रीबन 35 मीटर और चौड़ाई साठ ज़रा, तक़रीबन 30 मीटर रखी थी।

(उद्धरित जुस्तजू-ए-मदीना अज़ अब्दुल हमीद कादरी पृष्ठ 437-438 ओरीएंटल पब्ली केशन्ज़् पाकिस्तान 2007 ई.)

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दौर में मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पहली बढ़ोतरी मुहर्रम 7 हिज्री, जून 628 ई. में हुई। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ज़व-ए-ख़ैबर से कामयाब हो कर लौटे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बढ़ोतरी और तामीर-ए-नौ का हुक्म-जारी फ़रमाया। मस्जिद की बढ़ोतरी दक्षिण की ओर अर्थात क़िबले की ओंर और पूर्व की ओर नहीं की गई। ज़्यादा-तर बढ़ोतरी उत्तरी की ओर की गई और कुछ पूर्व की ओर भी। उत्तरी ओर सहाबा किराम के कुछ घर थे। इस जानिब एक अंसारी सहाबी का घर था जिस को अपना मकान देने में कुछ हिच किचाहट थी। ऐसे में जैसे के पहले वर्णन हो चुका है हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी जेब से दस हज़ार दीनार देकर वह घर ख़रीद लिया और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश किया। इस तरह मस्जिद की बढ़ोतरी ज़्यादा-तर उत्तरी ओर और पूर्व की ओर संभव हो सकी। इस बढ़ोतरी के बाद मस्जिद का कुल क्षेत्र 100X100 ज़रा अर्थात 50X50 मीटर हो गया।

(उद्धरित जुस्तजू-ए-मदीना अब्दुल हमीद कादरी से पृष्ठ 446-447 ओरीएंटल पब्लीकेशन्ज़् पाकिस्तान 2007 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दूसरी बढ़ोतरी 17 हिज्री में हुई। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दौर में मस्जिद कच्ची ईंटों से बनी हुई थी जिस की छत खजूर की टहनियों और पत्तों से बनी हुई थी और सतून खजूर के तनों के थे। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु

ने उसको इसी हालत में रहने दिया और इस में कोई तबदीली या बढ़ोतरी नहीं की। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस की तामीर-ए-नौ और बढ़ोतरी करवाई परन्तु उस की हैयत और तर्ज़-ए-तामीर में कोई तबदीली नहीं करवाई। जिस तरह था उन्ही बुनियादों पर या इसी तरह पुराना हिस्सा रहने दिया था। उन्होंने भी उसे उसी तरह के तरीक पर बनवाया केवल एक्सटेंशन हुई। छत पहले की तरह खजूर के पत्तों की ही रही। उन्होंने केवल सतून लकड़ी के डलवा दिए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने 17 हिज्री में मस्जिद की तामीर को अपनी निगरानी में मुकम्मल करवाया। इस बढ़ोतरी के बाद मस्जिद का रकबा 50X50 मीटर जो पहले था से बढ़कर 70X60 मीटर हो गया या 140X120 ज़रा हो गया। इस रिवायत से ज़ाहिर होता है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में भी मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वही रही जो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में थी जबकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तामीर-ए-नौ के साथ इस में काफ़ी बढ़ोतरी हो गई।

(उद्धरित जुस्तजूए मदीना से अब्दुल हमीद कादरी पृष्ठ 459 ओरीएंटल पब्ली केशन्ज़् पाकिस्तान 2007 ई.)

फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर ख़िलाफ़त में मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बढ़ोतरी हुई और तामीर-ए-नौ भी हुई। यह 29 हिज्री की घटना है। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बढ़ोतरी और नव निर्माण किया तो उसे ख़ूबसूरत और मज़बूत बनाने के लिए पत्थर जिप्सम और नक़्श-ओ-निगार का प्रयोग किया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने दीवारें पत्थर की बनवाईं जिन पर नक़्श-ओ-निगार बने हुए थे और मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में पहली बार सफ़ेदी के लिए चूने का प्रयोग भी किया गया। छत में शीशम की लकड़ी प्रयोग हुई थी। जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु 24 हिज्री में ख़लीफ़ा निर्धारित हुए तो लोगों ने उनसे निवेदन किया कि मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बढ़ोतरी कर दी जाए। उन्होंने सेहन की तंगी की शिकायत की। खासतौर पर नमाज़-ए-जुमा के इजतिमाआत पर ऐसा कसरत से होता। अक्सर होता कि लोगों को मस्जिद के बाहर वाले हिस्सा में नमाज़ अदा करनी पड़ती थी। इस लिए हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने सहाबा किराम से मश्वरा किया। सब की राय यही थी कि पुरानी मस्जिद को तोड़ कर उसकी जगह नई मस्जिद बनाई जाए। पहली मस्जिद को गिरा दिया जाए, नई तामीर की जाए। एक दिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने नमाज़ ज़ुहर के बाद मिंबर पर ख़ुतबा दिया और फ़रमाया समस्त तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। मैं मस्जिद को तोड़ कर इस की जगह नई मस्जिद बनाना चाहता हूँ और मैं गवाही देता हूँ कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़बान मुबारक से सुना है कि जो भी मस्जिद बनाता है अल्लाह तआला उसको जन्नत में एक घर अता कर देता है। मुझ से पहले हज़रत उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हु थे उनके हाथों मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बढ़ोतरी और तामीर-ए-नौ मेरे लिए एक उदाहरण और नज़ीर है। मैंने राए देने वाले लोगों से मश्वरा किया है और उन सब की सहमती से राय यही है कि मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को तोड़ कर उसे दुबारा बनाया जाना चाहिए।

जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिद की तामीर नौ का मन्सूबा पेश किया तो कुछ सहाबा किराम ने इस मुआमले में अपने आरक्षण पेश किए। उनका ख़्याल था गिरानी नहीं चाहिए। उनमें वे सहाबा किराम शामिल थे जो बिल्कुल मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़रीब रहते थे और जिनके मकानात इस मंसूबे से प्रभावित होते नज़र आ रहे थे। लोगों की अक्सरीयत ने तो इस योजना की हिमायत की परन्तु कुछ सहाबा किराम ने आपत्ति की। हज़रत अफ्लाह बिन हमीद ने वर्णन किया कि जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने चाहा कि मिंबर पर तशरीफ़ ला कर लोगों की राय मालूम करें तो मर्वान बिन हकम ने कहा निसंदेह

यह एक नेक काम है। इस लिए क्या ज़रूरत है कि आप लोगों की राय मालूम करें। इस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी डाट फटकार की और सरज़निश करते हुए फ़रमाया तेरा भला हो में किसी मुआमले में लोगों पर जबर और ज़बरदस्ती का क़ायल नहीं हूँ। मुझे उनसे ज़रूर मश्वरा करना है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया में अपनी राय को लोगों पर थोपना नहीं चाहता। मैं तो जो काम भी करूँगा उनकी मर्ज़ी से करूँगा। फिर जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने मंसूबे के सम्बन्ध में राए देने वाले अस्हाब को भरोसे में ले लिया तो मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उत्तरी ओर स्थित घरों को ख़रीद कर उनकी ज़मीन हासिल की। जबकि आपने हर्जाने के तौर पर इन अस्हाब को काफ़ी पैसे पेश किए थे परन्तु फिर भी कुछ अस्हाब अपने घरों को देने के हक़ में नहीं थे और तक़रीबन चार वर्ष गुज़र गए परन्तु कोई आशा के अनुसार सफ़लता नहीं हो सकी। हज़रत उबयदुल्लाह खौलानी रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि जब लोग अपने मकानात देने के लिए आना कानी कर रहे थे और तर्क लम्बे होते जा रहे थे तो मैंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को कहते हुए सुना तुम लोग बहुत बातें बना चुके। मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इरशाद फ़रमाते हुए सुना था कि जो कोई अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए मस्जिद की तामीर करेगा अल्लाह तआला इसके प्रतिफल में इस के लिए ऐसा ही महल जन्नत में तामीर करवाएगा।

इसी तरह हज़रत महमूद बिन लबीद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नई तामीर का इरादा किया तो लोगों को उनका मन्सूबा पसंद नहीं आया। उनका इसरार था कि मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इसी हालत में रहने दिया जाए जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अह्द में थी। इस पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया जो कोई अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए मस्जिद तामीर करेगा अल्लाह तआला प्रतिफल में उसके लिए ऐसा ही महल जन्नत में तामीर करवाएगा। जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों को क़ायल करने में कामयाब हो गए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने रबीउल अव्वल के महीने में 29 हिज्री, नवंबर 649 ई. में काम की इबतिदा करवा दी। तामीर-ए-नौ के काम में केवल दस माह लगे और इस प्रकार एक मुहर्रम 30 हिज्री को मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तैयार हो गई। आप रज़ियल्लाहु अन्हु स्वयं काम की निगरानी फ़रमाते थे। दिन के वक़्त हमेशा रोज़ा रखते और रात के वक़्त यदि नींद मजबूर करती तो मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में ही सस्ता लिया करते थे। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन सफ़ी से मर्वी है कि मैंने देखा कि मस्जिद की तामीर के लिए मासला उठा-उठा कर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास लाया जाता और मैंने यह भी देखा कि वह हमेशा अपने पांव पर खड़े-खड़े कारीगरों से काम करवाते और फिर जब नमाज़ का वक़्त आ जाता तो उनके साथ नमाज़ अदा करते और फिर कभी कभी वहीं सो भी जाया करते थे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दक्षिण में क़िबला की ओर वुसअत दी और इस की क़िबला की दीवार को उस जगह तक ले आए जहां कि आज तक है। उत्तरी ओर इस में पच्चास ज़राह तक़रीबन 25 मीटर की बढ़ोतरी की गई और कुछ बढ़ोतरी पूर्व की ओर भी करवाई गई। जबकि पूर्व की ओर जहां पवित्र कमरे थे कोई बढ़ोतरी नहीं की गई। इसके बाद मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कुल रकबा 160X150 ज़राह अर्थात तक़रीबन 80X75 मीटर हो गया।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में मस्जिद के दरवाज़ों की संख्या छ: थी। पहली बार मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में पत्थरों पर नक़्श-ओ-निगार बनवाए गए। इस में सफ़ेदी करवाई गई। हज़रत खारजा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हु के वर्णन के अनुसार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पूर्व की ओर और पश्चिमी दीवारों में रोशनदान रखवाए थे। मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बढ़ोतरी के लिए हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को जो मकान लेने पड़े उनमें उम्मुल-मोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा का हुज्रा भी शामिल था जिन को उस के बदले में घर दीवार क़िबले से जुड़ी हुई दक्षिण पूर्व की ओर कोने पर दे दी गई थी और एक दरीचे के द्वारा से उनकी आमद-ओ-रफ़त कमरे तक आसान बना दी गई थी। इसके अतिरिक्त हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के विरसा से उनके मकान का आधा हिस्सा एक लाख दिरहम के बदले में ख़रीदा गया और इस तरह दारुल अबास का कुछ हिस्सा ख़रीद कर मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में शामिल किया गया था। दीवार क़िबला को दक्षिणी जानिब ले जाने के अतिरिक्त सबसे नुमायां अंतर जो कि मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में हुआ वह यह था कि मेहराब नब्वी की जगह क़िबला का स्थान भी इस की सीध में इतना ही आगे ले जाना पड़ा जहां तक दीवार क़िबला ले जाई गई थी जो ठीक उसी जगह पर थी जहां आजकल हम मेहराब उस्मानी को देखते हैं वहां प्रतीकात्मक मेहराब भी बनाया गया था। मिट्टी के गारे की जगह उन्होंने पिसा हुआ पत्थर प्रयोग करवाया था और पत्थर से बने हुए सतून में सीसे की बनी सलाख़ें डलवाई गई थीं। इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि नए सतून इन्ही सतूनों की जगह बनाए जाएं जहां नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र समय में खजूर के तने से बने हुए सतून हुआ करते थे।

तामीर में जो मवाद और तर्ज़-ए-तामीर प्रयोग हुआ वे इसी तरह का था जैसा कि यरूशलेम में गुम्बदे सखरा की तामीर में कुछ नितीनियों ने प्रयोग किया था। छत शीशम की लकड़ी से बनाई गई थी जो कि लकड़ी के शहतीरों पर रखी गई थी जो सीसा पिलाए पत्थरों के सतूनों पर बने थे। क्योंकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की गवाही मेहराब नब्वी में नमाज़ की इमामत करवाते हुए हुई थी, इस बात को यक़ीनी बनाने के लिए कि भविष्य में कोई ऐसी घटना न हो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेहराब के स्थान पर एक मकसूरा (मस्जिद में सफ़ों से आगे इमाम के लिए खड़ा होने की जगह जिस में मंच बना होता है) तामीर करवाया जो कि मिट्टी की ईंटों से बना था और इस में झरोके और रौज़न रखे गए थे ताकि इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाले लोग अपने इमाम को देख सकें। यह पहला सुरक्षा का तरीक़ा था जो कि मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में तामीर हुआ जो कि बाद में दमिशक़ में ख़ुलफ़ाए बनू उमय्या की सुरक्षा का प्रोटोकोल का बाक़ायदा हिस्सा बन गया था। (उद्धरित जुस्तजू-ए-मदीना अब्दुल हमीद कादरी पृष्ठ 463 से 465 ओरीएंटल पब्ली केशन्ज़् पाकिस्तान 2007 ई.) (उर्दू लुग़त तारीख़ी उसूलों पर भाग 18 पृष्ठ 492 ज़ेर लफ़्ज़ मकसूरा)

अर्थात मेहराब को दीवार बना के महफ़ूज़ किया गया था लेकिन मुक़तदी इमाम को देख सकते थे। बहरहाल इसके बाद फिर विभिन्न वक़्तों में मस्जिद की बढ़ोतरी होती रही है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को तो मैं हज़रत सुलेमान से समानता देता हूँ। उनको भी इमारात का बड़ा शौक़ था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के वक़्त में अंदरूनी फ़ित्ने ज़रूर थे। एक तरफ़ मुआवीया थे और दूसरी तरफ़ अली रज़ियल्लाहु अन्हु और उन फ़ित्नों के कारण मुस्लमानों के ख़ून बहे। 6 वर्ष के अंदर इस्लाम के लिए कोई करवाई नहीं हुई। इस्लाम के लिए तो उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु तक ही सारी कार्यवाहियां ख़त्म हो गईं। फिर तो ख़ाना-जंगी शुरू हो गई।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 278)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "यह ज़रूरी नहीं है कि मस्जिद रत्नों से सुसज्जित और पक्की इमारत की हो बल्कि सिर्फ़ ज़मीन रोक लेनी चाहिए और वहां मस्जिद की हदबंदी कर देनी चाहिए और बाँस इत्यादि का कोई छप्पर इत्यादि डाल दो ताकि बारिश इत्यादि से आराम हो। ख़ुदा तआला तकल्लुफ़ात को पसंद नहीं करता। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मस्जिद कुछ ख़जूरों की शाख़ों की थी और इसी तरह चली आई। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसलिए कि उनको इमारत का शौक़ था अपने ज़माना में उसे पक्का बनवाया। मुझे ख़्याल आया करता है कि हज़रत सुलेमान और उस्मान का अनुप्रास ख़ूब मिलता है। शायद इसी मुनासबत से उनको इन बातों का शोक था।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 119)

मस्जिदुल हराम की बढ़ोतरी 26 हिज्री में हुई। 26 हिज्री में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हर्म के निशानात का शुरू से नवीनीकरण किया और मस्जिदुल हराम की बढ़ोतरी फ़रमाई और इर्द-गिर्द के मकानात ख़रीद कर मस्जिदुल हराम में शामिल किए। कुछ लोगों ने अपनी रजामंदी से मकानात बेच दिए लेकिन कुछ अपने मकानात बेचने को तैयार नहीं हुए। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको हर संभव तरीक़े से राज़ी करने की कोशिश की लेकिन वे अपने मत पर डटे रहे। अंतत: हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के हुक्म से वे समस्त मकानात गिरा दिए गए और उनकी क़ीमत आपने बैतुल माल में जमा करा दी। इस पर उन लोगों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़ शोर मचाया तो आपने उन्हें गिरफ़्तार करके जेल भेजने का हुक्म दिया। फिर उनसे मुख़ातब हो कर आपने फ़रमाया। क्या तुम

जानते हो कि किस बात की वजह से तुम्हारा में मेरे ख़िलाफ़ यह साहस हुआ है? इस साहस का कारण केवल मेरी विनम्रता है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी तुम्हारे साथ ऐसा ही मुआमला किया था परन्तु उनके ख़िलाफ़ तो तुम लोगों ने कोई हंगामा नहीं किया था। इस के बाद अब्दुल्लाह बिन ख़ालिद बिन उसैद ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से उन हंगामा करने वालों के बारे में बात की तो उन्हें छोड़ दिया गया ।

(तारीख़ तिब्री भाग 5 पृष्ठ 92 सुम्मा दख़लतु सना सत व अश्रीन ... दारुल फ़िक्र बेरूत 2002 ई.)

पहला इस्लामी समुद्री बेड़ा भी 28 हिज्री में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में बनाया गया। अमीर मुआवीया बिन अबू सुफ्यान वह पहले व्यक्ति थे जिन्हों ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-ख़िलाफ़त में समुद्री जंग की। अमीर मुआवीया ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से भी समुद्री जंग की आज्ञा मांगी थी लेकिन आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने आज्ञा नहीं दी थी। जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा निर्धारित हुए तो अमीर मुआवीया ने आपसे भी बार-बार वर्णन किया और आज्ञा मांगी। अंतत: हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने आज्ञा दे दी और फ़रमाया कि तुम ख़ुद लोगों का इंतिख़ाब न करो और न ही उनके मध्य क़ुरआ अंदाज़ी करो बल्कि उन्हें विकल्प दो। फिर जो अपनी ख़ुशी से इस जंग में शामिल होना चाहे उसे साथ ले जाओ और उस की सहायता करो। इसलिए अमीर मुआवीया ने ऐसा ही किया। उन्होंने अब्दुल्लाह बिन केस जासी को समुद्र का अमीर निर्धारित किया जिसने समुंद्र में गर्मी के मोसम में और सर्दी के मोसम में पच्चास जंगें कीं और उन सब जंगों में मुस्लमानों का न तो कोई सिपाही डूबा और न ही किसी किस्म का कोई नुक़्सान हुआ।

(तारीख़ तिब्री भाग 5 पृष्ठ 97 सुम्मा दख़लतु सिन्नता समानु व इश्रीन/ वर्णन ख़बर अन ग़ज़व मावी अय्याहा)

रिवायत में यह आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से आचरण में सबसे ज़्यादा समानता हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की थी। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी बेटी के पास तशरीफ़ लाए जबकि वह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का सिर धो रही थीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : हे मेरी बेटी अबू अब्दुल्लाह अर्थात उस्मान से बेहतरीन सुलूक से पेश आया करो क्योंकि वह मेरे सहाबा में से आचरण के लिहाज़ से सबसे ज़्यादा मेरे समान है।

(मजमा ज़वायद और मंबा फ़वायेद भाग 9 पृष्ठ 58 किताब मनाकिब बाब मा जा आ फ़ी खल्केही हदीस नंबर 14500 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

हज़रत याह्या बिन अब्दुर्रहमान बिन हातिब रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि मैंने अपने पिता को यह कहते हुए सुना कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा में से बात को मुकम्मल और ख़ूबसूरत रंग में वर्णन करने में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से बेहतर किसी को नहीं देखा जबकि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ज़्यादा बातचीत से परहेज़ करते थे। (अल्तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साअद भाग तीन पृष्ठ 32 उस्मान बिन अफ्फ़ान, दारुल अहया तुर्रास अरबी बेरूत 1996 ई.)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि मैं हज़रत रुकय्या रज़ियल्लाहु अन्हा पुत्री रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। ग़ालिबन यहां हज़रत रुकय्या रज़ियल्लाहु अन्हा की जगह हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा मुराद हो सकती हैं क्योंकि रिवायत में है कि बदर के युद्ध के अवसर पर हज़रत रुकय्या रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात हो गई थी और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु उस के पाँच वर्ष के बाद मुस्लमान हुए थे और मदीना आए थे तो हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा मुराद हो सकती हैं क्योंकि उनकी वफ़ात 9 हिज्री में हुई थी। बहरहाल यह रिवायत है कि पुत्री रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की पत्नी थीं और उनके हाथ में कंघी थी। उन्होंने बताया कि अभी-अभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे पास से तशरीफ़ ले गए हैं और मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सिर में कंघी की है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझ से पूछा कि तुम अबू अब्दुल्लाह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को कैसा पाती हो? मैं ने कहा कि बहुत अच्छा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : अत: तू भी उनसे उसी सम्मान से पेश आया कर क्योंकि वह मेरे सहाबा में से आचरण के लिहाज़ से मुझ से सबसे ज़्यादा समानता रखते हैं। (मजमा ज़वायद और मंबा फ़वायद अली बिन अबू बकर, भाग 9 पृष्ठ 58 किताब मनाकिब बाब माजाआ फ़ी खल्किही रज़ियल्लाहु अन्हु हदीस नंबर 14501दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का यह वर्णन अभी यहां ख़त्म करता हूँ। आज भी मैंने कुछ जनाज़े पढ़ाने हैं। उनका वर्णन करना चाहता हूँ।

पहला जनाज़ा मुबश्शिर अहमद रिंद साहिब पुत्र अहमद बख़श साहिब मुअल्लिम वक़्फ़ -ए-जदीद रब्वा का है जो 10 मार्च को वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। आपका संबंध गाँव रिंदां ज़िला डेरा ग़ाज़ी ख़ान से था। पैदाइशी अहमदी थे। 1990 ई. में थरपारकर से उन्होंने बतौर मुअल्लिम वक़्फ़ जदीद ख़िदमत का आरंभ किया और फिर विभिन्न वक़्तों में विभिन्न जगहों पर मुअल्लिम और इन्सपैक्टर के तौर पर काम किया। जहां भी आपको भिजवाया गया हमेशा लब्बैक कहते रहे और कभी कोई बहाना प्रस्तुत नहीं किया। वक़्फ़ को हमेशा वफ़ा के साथ निभाने की कोशिश की। अपनों और ग़ैरों सबने आपके बारे में लिखा है कि इंतिहाई मेहनती, दुआगो, बाक़ायदगी से तहज्जुद अदा करने वाले, बेहतरीन दाई इलल्लाह, अच्छे वक्ता, बहुत मिलनसार, मेहमान नवाज़, ख़ुश-मिज़ाज और विनम्र इन्सान थे। हमेशा नरम व्यवहार रखते और मीठी भाषा का प्रयोग करते थे लेकिन निज़ाम-ए-जमाअत और ख़िलाफ़त के ख़िलाफ़ कोई बात सुनते तो नंगी तलवार बन जाते थे और उस वक़्त तक इस महफ़िल से नहीं उठते थे जब तक कि उस व्यक्ति की इस्लाह नहीं कर लेते। पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त दो बेटे और तीन बेटियां शामिल हैं। आपके छोटे बेटे प्रिय शाज़िल अहमद जामिआ अहमदिया रब्वा में दर्जा साल्सा के विद्यार्थी हैं। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा वर्णन मुनीर अहमद फ़र्ख़ साहिब पूर्व अमीर जमाअत ज़िला इस्लामाबाद का है। लम्बी बीमारी के बाद 9 मार्च को उनकी कैनेडा में, 84 वर्ष की आयु में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। आप 9/1 हिस्सा की वसीयत की मूसी थे। मुनीर फ़र्ख़ साहिब इंजीनियर के दादा का नाम हज़रत मुंशी अहमद बख़श साहब रज़ियल्लाहु अन्हु थे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। उन्होंने क़ादियान जा कर जलसा सालाना 1903 ई. में बैअत की सआदत पाई थी। उनके पिता का नाम डाक्टर चौधरी अब्दुल ओहद साहिब थे जो एम. एस. सी. और पी. एच. डी. थे, एग्रीकल्चर में की हुई थी और पी. एच. डी करना इस ज़माना में बहुत ज़हीन विद्यार्थियों का काम था। बहरहाल उन्होंने पी. एच. डी. की। आप कुछ समय अमीर जमाअत लायलपुर के तौर पर भी ख़िदमत अंजाम देते रहे। 1944 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब अहमदी नौजवानों को विशेषता विज्ञानिकों को ख़िदमत दीन के लिए वक़्फ़ की तहरीक की तो डाक्टर साहिब ने भी, फ़र्ख़ साहिब के पिता ने भी वक़्फ़ कर दिया और सरकारी नौकरी को छोड़ कर पत्नी बच्चों के साथ क़ादियान स्थानांतरित हो गए। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की सीधी निगरानी में फ़ज़ले उमर रिसर्च इंस्टीटियूट का क़ियाम अमल में आ चुका था। हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको डायरेक्टर फ़ज़ल-ए-उमर रिसर्च इंस्टीटियूट निर्धारित फ़रमाया। इसके साथ ही तालीमुल इस्लाम कॉलेज में बतौर साईंस टीचर के भी उनका चयन हुआ।

फ़र्ख़ साहिब ने यूनीवर्सिटी आफ़ इंजनीयरिंग ऐंड टैक्नोलोजी से इलैक्ट्रीकल इंजनीयरिंग की डिग्री हासिल की और फिर शुरू में विभिन्न जगहों में काम किया। फिर टैलीग्राफ़ ऐंड टेलीफ़ोन डिपार्टमैंट हकूमत-ए-पाकिस्तान में बाक़ायदा सर्विस का आग़ाज़ किया। सर्विस के दौरान आपने देश के अधिकतर शहरों में ख़िदमात सरअंजाम दी। अत्यधिक मुल्कों में हकूमत-ए-पाकिस्तान की नुमाइंदगी करते रहे। 1997 ई. में डायरेक्टर जनरल पाकिस्तान टैली कम्यूनीकेशनज़ लिमीटेड की हैसियत से रिटायर्ड हुए। उनकी पत्नी, दो बेटे और दो बेटियां हैं। अल्लाह तआला उनके बच्चों को भी उनके नक़्श-ए-क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

रावलपिंडी में क़ियाम के दौरान क़ायद ज़िला मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया के तौर पर उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली और यह दौर 1974 ई. का कठिन दौर था। बहरहाल उनको उस ज़माने में ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली 1977 ई. में इस्लामाबाद मुस्तक़िल रिहायश रखने के बाद विभिन्न ख़िदमात की उनको तौफ़ीक़ मिली। 1990 ई. में बतौर नायब अमीर प्रथम ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। फिर जब रिटायरमैंट हुई तो उन्होंने वक़्फ़ किया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अपने आपको पेश किया जो स्वीकार हुआ। फिर 1999 ई. को बतौर अमीर जमाअत इस्लामाबाद शहर और ज़िला उनको ख़िदमत की ज़िम्मेदारी

मिली। रब्वा में उनके जो काम हैं उनमें डाइरेक्ट डायलिंग सहूलत मुहय्या करने के लिए उन्होंने डीजीटल ऐक्सचेंज के क़ियाम में काफ़ी कोशिश की और मर्कज़ी फाइनेंस कमेटी के मैंबर थे। IAAAE के मुख्य मैंबर थे और विभिन्न विभागों में उनको एज़ाज़ी तौर पर भी और वैसे भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। 1996 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह्महुल्लाह ने उनको डायरेक्टर फ़ज़ल-ए-उमर फ़ाउंडेशन निर्धारित फ़रमाया। आखरी दम तक यह इस ख़िदमत पर काम करते रहे। 1980 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रह्महुल्लाह के समय में जब रब्वा में जलसा सालाना के अवसर पर ग़ैर मुल्की मेहमानों के लिए जलसा सालाना की तक़ारीर के अनुवाद की सहूलत के लिए आग़ाज़ हुआ तो अहमदी इंजीनियर की एक टीम तैयार की गई थी और इस में भी उन्होंने बड़ी मेहनत से काम किया और नुमायां काम करने की उन्हें तौफ़ीक़ मिली और इस टीम के मुंतज़िम आला भी मुनीर फ़र्ख़ साहिब ही थे। अप्रैल 1984 ई. में जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह्महुल्लाह ने इंग्लिस्तान हिज्रत की तो यहां यू.के के जलसा सालाना में भी बाक़ायदगी से हर वर्ष आते थे और ट्रांसलेशन का काम उनके सपुर्द होता था। लोगों तक ट्रांसलेशन पहुंचाना और बड़े अहसन रंग में उन्होंने यह काम सरअंजाम दिया। बड़ी मेहनत से काम किया करते थे। उनके दौर-ए-इमारत में इस्लामाबाद में जमाअती तामीरात भी बहुत ज़्यादा हुई हैं।

उनके एक बेटे कहते हैं कि जमाअती कामों में बच्चों को बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने की तलक़ीन करते थे। गवर्नमेंट की नौकरी करने के अतिरिक्त जमाअत की ख़िदमत में हमेशा आगे-आगे रहते थे। नौकरी से सीधा जमाअत के दफ़्तर आते और जमाअती ज़िम्मेदारियाँ निभाते। हर वर्ष जलसा सालाना यू.के. के लिए ख़ुसूसन छुट्टी बचा के रखते थे। नौकरी के दौरान अहमदी होने की वजह से उनकी पोस्टिंग दूर दराज़ के इलाक़े डेरा इस्माईल ख़ान में हो गई और उस वक़्त के प्रधानमंत्री भुट्टो साहिब ने कह दिया कि उनको दुबारा इस्लामाबाद नहीं लगाना। लेकिन अल्लाह तआला ने फ़ज़ल फ़रमाया फिर उनकी दुबारा पोस्टिंग इस्लामाबाद ही हुई और वहां से फिर उनको विभिन्न देशों में हुकूमत के प्रतिनिधि के तौर पर जाने की भी तौफ़ीक़ मिली। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा ब्रिगेडियर रिटायर्ड मुहम्मद लतीफ़ साहिब का है जो साबिक़ अमीर ज़िला थे। 28 फ़रवरी को 77 वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। ब्रिगेडियर लतीफ़ साहिब ने अपने पिता साहिब के साथ तक़रीबन 1955 ई. में अहमदीयत क़बूल की थी। ब्रिगेडियर साहिब के पिता 2000 ई. में फ़ौत हुए थे। इसके बाद ख़ानदान में ब्रिगेडियर साहिब अकेले अहमदी थे। अर्थात उनके बच्चों के अतिरिक्त। उनकी एक पत्नी, दो बेटे और दो बेटियां हैं। अल्लाह तआला उनके बच्चों को भी उनके नक़श-ए-क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

2000 ई. में अपनी रिटायरमैंट के बाद अपना सारा वक़्त जमाअती ख़िदमात बजा लाने में गुज़ारा। सैक्रेटरी उमूर-ए-आमा और नायब अमीर ज़िला रावलपिंडी थे। 2019 ई. से वफ़ात 2021ई. तक बतौर अमीर ज़िला रावलपिंडी ख़िदमत बजा लाने की तौफ़ीक़ मिली। तक़रीबन बीस वर्ष तक उनको जमाअत की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। बड़े हमदरद, ग़रीबों का ख़्याल रखने वाले, जमाअती ख़िदमत को फ़ज़्ले इलाही समझ कर अदा करने वाले थे और अपने बच्चों को भी यही तलक़ीन करते रहे। आख़िरी बीमारी के ज़ोर पर भी जमाअती ख़िदमत के लिए जब भी मर्कज़ से किसी भी ओहदेदार ने बुलाया फ़ौरन चले जाते थे और अपनी बीमारी की पर्वा नहीं की। उन्हें कैंसर की बीमारी थी और अपना ईलाज भी साथ ही करवाते थे। फिर भी ख़िदमत पर हर वक़त हाज़िर रहते थे और कभी इन्कार नहीं किया। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा आदरणीय कौनुक बैक ओमरू बयकोफ़ (konokbek omurbekov) साहिब का है जो किर्गिज़स्तान के अहमदी हैं। 22 फ़रवरी को 67 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। इलयास कुबातूफ़ (ilyas kubatov) जो किर्गिज़स्तान के नैशनल प्रैज़ीडैंट हैं लिखते हैं कि ख़ाकसार का आदरणीय कौनुक बैक साहिब से पंद्रह वर्ष से भी ज़्यादा अरसा का ताल्लुक़ है। मरहूम जमाअत-ए-अहमदिया किर्गिज़स्तान के इबतिदाई अहमदियों में से एक थे। मरहूम ने सन 2000 में अहमदीयत क़बूल की। मरहूम बहुत मुख़लिस अहमदी थे। हमेशा जमाअती प्रोग्रामों में हिस्सा लेते और बाक़ायदगी से जमाअती चंदों और दूसरी माली क़ुर्बानीयों में हिस्सा लेते थे और बरवक़्त अपना वादा पूरा करते थे। बरवक़्त पंचों नमाज़ें अदा करते और बाक़ायदगी से तहज्जुद अदा करते थे। सोवीयत यूनीयन के दौर में अपनी जवानी के वक़्त में मरहूम मलिक की बड़ी-बड़ी तन्ज़ीमों और कारोबारी इदारों में उच्च ओहदों पर फ़ायज़ थे और अपनी दियानतदारी, शराफ़त और मेहनत के कारण सब उनकी बहुत तारीफ़ करते थे । ज़िंदगी के आख़िरी सालों में जब कोई काम इत्यादि नहीं करते थे तो वह किताबें बेचा करते थे। खासतौर पर इस्लामी कुतुब बेचा करते थे। किर्गिज़स्तान में जमाअत की मज़हबी सरगर्मीयों पर पाबंदी से पूर्व वह जमाअत की कुतुब और जमाअती अनुवाद क़ुरआन लोगों को बाक़ायदा तक़सीम करते थे। अपनी तब्लीग़ के द्वारा उन्होंने बहुत से लोगों को अहमदीयत का पैग़ाम पहुंचाया। मरहूम ने अपने पीछे अपनी पत्नी और सात वर्ष का बेटा यादगार छोड़े हैं। उनकी यह दूसरी पत्नी हैं। पहली पत्नी से उनकी तलाक़ हो गई थी। उनके भी बच्चे हैं। उनकी औलाद जवान है जो शायद अहमदी नहीं हैं। अल्लाह तआला उन्हें भी अहमदीयत क़बूल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

मुबल्लिग़ साहिब लिखते हैं कि रशियन भाषा में क़ुरआन-ए-क्रीम का तर्जुमा प्रकाशित हुआ तो उन्होंने कुछ ग़लतियों की निशानदेही की तो मैंने कहा कि फिर क़ुरआन-ए-करीम को पूरा पढ़ें और मुकम्मल निशानदेही करें तो उन्होंने दस पंद्रह दिनों में ही मुकम्मल क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ कर तर्जुमा पढ़ा और इग़लात की निशानदेही कर दी। मुबल्लिग़ साहिब ही लिखते हैं कि नमाज़ के लिए निहायत एहतिमाम से वुज़ू करते थे और उनको नमाज़ अदा करते हुए देखकर रशक आता था। आदरणीय अज़गींबाईफ़ आर्तु (uzgenbaev artur) साहिब कहते हैं हक़ीक़त तो यह है कि कौनोक बैक साहिब ने ही मुझे अहमदीयत का पैग़ाम पहुंचाया था। कहते हैं जब भी मैं सवालात करता मुझे हैरत-अंगेज़ अंदाज़ में उत्तर देते और आपके उत्तर मंतिक़ और अक़ल और हिक्मत से परिपूर्ण होते थे। आदरणीय कौनोक बैक साहिब बहुत आला आचरण के मालिक, साबिर और विनम्र इन्सान थे। आपके आचरण और उन विशेषताओं के कारण से ही मैं जमाअत में दाख़िल हुआ। जब मैंने रोज़ा रखने की, नफ़ली रोज़ा रखने की और दुआओं की तहरीक की है तो यह पीर को भी और जुमेरात को भी बाक़ायदा रोज़ा रखा करते थे। उनको कहा गया कि हफ़्ता में एक दिन रखा करें तो उन्होंने कहा कि मैं पीर के दिन भी रोज़ा रखता हूँ और जुमेरात को भी रखता हूँ ताकि ख़िलाफ़त की हर आवाज़ पर लब्बैक कहने वाला बन जाऊं। ख़िलाफ़त के फ़िदाई थे। ख़ुतबा जुमा बाक़ायदा रशियन भाषा में सुना करते थे। बड़े आजिज़ और ख़ाकसार इन्सान थे। बड़े ख़ुश-मिज़ाज थे। बड़े शौक़ से जैसा कि पहले भी कहा दावत इलल्लाह किया करते थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। सब मरहूमीन के दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी नसलों में भी उनकी नेकियां जारी फ़रमाए।

☆ ☆ ☆ ☆

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,

JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ 2 का शेष

कर के पढ़ाई और नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

29 मई शुक्रवार के दिन 2015

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े चार बजे पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान पर पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे।

आज शुक्रवार का दिन था । नमाज़-ए-जुमा की अदायगी का प्रबन्ध "बैयतुल सबूह" के क़रीब ही स्थित स्पोर्ट हाल SPORT AND FREIZEITZENTRUM KALBACH में किया गया था। यह स्पोर्ट हाल बड़ा वसीअ हाल है। इसके एक हिस्सा में पुरुषों का प्रबन्ध था और दूसरे हिस्सा में महिलाओं का प्रबन्ध था।

अपने प्यारे आक़ा की इक़्तिदा में नमाज़-ए-जुमा अदा करने के लिए जर्मनी की विभिन्न जमाअतों से जमाअत के लोग पुरुष और महिलाएं सुबह से ही इस स्पोर्ट सैंटर पहुंचना शुरू हो गए थे। कुछ फ़ैमिलीज़ तो बड़े लम्बी यात्रा करके आई थीं। कोलोन से आने वाली फ़ैमिलीज़ 190 किलोमीटर, हाइडल बर्ग से आने वाली 100 किलोमीटर, कोबलनज़से वाली 135 किलोमीटर BONN से आने वाले 180 किलोमीटर, कासल से आने वाले 200 किलोमीटर और हिमबर्ग से आने वाले लोग पाँच सौ किलोमीटर की लम्बी दूरी तै कर के जुमा की अदायगी के लिए पहुंचे थे।

जुमा पर कुल हाज़िरी 8700 थी। जिस में से 5500 पुरुष लोगों और 3200 महिलाओं थीं। जमाअत के लोग की आमद का एक तानता बंधा हुआ था।

आज का ख़ुतबा जुमा इस स्पोर्ट हाल सीधे M.T.A इंटरनैशनल के माध्यम से दुनिया-भर में LIVE प्रसारित हो रहा था। और इसके विभिन्न भाषाओं के अनुवाद भी हमेशा की तरह LIV E प्रसारित हो रहे थे।

एक बजकर पचपन मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ''बैयतुल सबूह'' से स्पोर्ट हाल KALBACH के लिए रवाना हुए। दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की स्पोर्ट हाल तशरीफ़ आवरी हुई जहां हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ख़ुतबा जुमा इरशाद फ़रमाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस ख़ुतबा जुमा का ख़ुलासा अख़बार बदर 4 जून 2015 अंक नंबर 23 में और मुकम्मल ख़ुतबा जुमा 18 जून 2015 अंक नंबर 25 में प्रकाशित हो चुका है।

हुज़ूर अनवर का यह ख़ुतबा तीन बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने नमाज़ जुमा और अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वापस बैयतुल सबूह तशरीफ़ ले आए और अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

फ़ैमिली मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े छः बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे और फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातें शुरू हुईं।

आज शाम के इस सैशन में 47 फ़ैमिलीज़ के 152 लोग और 34 लोगों ने इन्फ़िरादी तौर पर, इस तरह संपूर्णता कुल 199 लोग ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

इन सभी फ़ैमिलीज़ और लोगों ने अपने आक़ा के साथ तसावीर खिचवाने का सौभाग्य भी पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने विद्यार्थी को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों और बच्चीयों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम सवा नौ बजे ख़त्म हुआ। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला कुछ देर के लिए अपनी रहने के स्थान तशरीफ़ ले गए।

आमीन का समारोह

नौ बजकर चालीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में पधारे और आमीन के समारोह आयोजित हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निमंलिखित 24 बच्चों और बच्चीयों से क़ुरआन-ए-करीम की एक-एक आयत सुनी और अंत में आमीन करवाई।

रिहान अहमद, कामरान ताहिर, बिनयामीन, साहिल कलीम, सुबूर उताउल कुद्दूस, तफ़रीद अहमद, मबरूर अहमद नासिर, शहरयार अहमद ख़ुरशीद, फ़ारान ताहिर, मुअज़्ज़म ज़ेब राना, रमीज़ उबीद, वहाब सईद, आतिफ़ अहमद जावेद, साक़िब अहमद जावेद, नजीबुद्दीन, उमर अहमद।

प्रिय तहमीना बुशरा हस्न, प्रिय ज़ोहा सलीम, प्रिय सबीहा रहमान, प्रिय शाफिया साक़िब शेख़, प्रिय ताशफ़ा महमूद, प्रिय फ़रेहा नदिरत मुल्क, प्रिय आमना ग़फ़्फ़ार, प्रिय अम्तुल मुसव्विर रज़्ज़ाक़, प्रिय हिना कंवल, प्रिय अलीशा इकबाल।

आमीन के समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिबअ और इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए

30 मई शनिवार के दिन 2015

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े चार बजे पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, पत्र और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाएं और अपने पवित्र हाथ से उन पत्रों और रिपोर्टस पर हिदायात से नवाज़ा।

अकेले और परिवार के साथ मुलाक़ात

इसके बाद साढ़े ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे और फ़ैमिलीज़ और अकेले लोगों की मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ। आज के सैशन में 39 फ़ैमिलीज़ के 134 लोग और 35 लोग ने इन्फ़िरादी तौर पर मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ जर्मनी की विभित्न 33 जमाअतों से आई थीं KOLN से आने वाली फ़ैमिलीज़ 190 किलोमीटर और ओसना ब्रूक से आने वाली फ़ैमिलीज़ 330 किलोमीटर की यात्रा कर के आई थीं। इन सभी फ़ैमिलीज़ और लोगों ने मुलाक़ात के समय अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों और बच्चीयों को चॉकलेट फ़रमाए।

मुलाक़ातों का ये प्रोग्राम दो बजकर दस मिनट तक चलते रहे। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पधार कर नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

कालेज और यूनीवर्सिटीज़ में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात

आज कालेज और यूनीवर्सिटीज़ में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ दो अलग अलग अलग-अलग प्रोग्राम रखे गए थे।

पहला प्रोग्राम विद्यार्थीयों का था और इस का प्रबन्ध मस्जिद के पुरुषों के हाल में किया गया था।

प्रोग्राम के अनुसार छः बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हाल में पधारे और विद्यार्थीयों के प्रोग्राम का आरंभ तिलावत क़ुरआन-करीम से हुआ। जो प्रिय अर्सलान बाजवा साहिब ने की और इस का उर्दू अनुवाद प्रिय नवेद अहमद साहिब ने किया।

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार नैशनल सेक्रेटरी साहिब शिक्षा ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बताया कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत स्टूडैंटस असोसिएशन में निरंतर विद्यार्थी का DATA और एकत्र किया जा रहा हैं। इस समय तक हम 70 प्रतिशत विद्यार्थी के कवायफ़ अपने रिकार्ड में ला चुके हैं और उन विद्यार्थीयों की संख्या 369 है।

हमारे रिकार्ड के अनुसार 67 प्रतिशत Bachlor कर रहे हैं 19 प्रतिशत Master कर रहे हैं, 10 प्रतिशत State Examination कर रहे हैं 2.4

प्रतिशत PhD कर रहे हैं और 1.1प्रतिशत Diploma कर रहे हैं।

इन 369 में से निमंलिखित विभिन्न फ़ील्ड में स्टूडैंटस पढ़ रहे हैं।

37 प्रतिशत Engineering में पढ़ रहे हैं, 18 प्रतिशत Informatics पढ़ रहे हैं 17 प्रतिशत economic sciences पढ़ रहे हैं, 9 प्रतिशत Natural science पढ़ रहे हैं, 7 प्रतिशत human/cultural sciences पढ़ रहे हैं 5 प्रतिशत मैडीसन पढ़ रहे हैं, 5 प्रतिशत law पढ़ रहे हैं और 2 प्रतिशत lectureship पढ़ रहे हैं।

अहमदिया मुस्लिम स्टूडैंटस असोसिएशन जर्मनी के विभिल्न 26 यूनीवर्सिटीज़ से निरंतर सम्पर्क में है और उन राबतों के अधीन इन यूनीवर्सिटीज़ में विभिन्न प्रोग्रामज़ आयोजित करवाती है उदाहरण के लिए उस समय जर्मनी की 12 यूनीवर्सिटीयों में नमाज़ बाजमाअत का प्रबन्ध किया गया है और तीन में नमाज़-ए-जुमा का प्रबन्ध है।

इसी तरह यूनीवर्सिटी में तब्लीग़ी प्रोग्राम भी आयोजित किए जाते हैं और अहमदी विद्यार्थी के माध्यम से विभिन्न विषयों पर प्रोग्राम और बैठकें आयोजित होती हैं। अब तक Marburg, Hamburg, Frankfurt की यूनीवर्सिटीयों में तीन प्रोग्रामज़ हो चुके हैं और Hamburg, Heidelberg की यूनीवर्सिटीयों में दो प्रोग्रामज़ अगले महीने आयोजित होंगे।

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार दो विद्यार्थी ने अपने रिसर्च पेपर पढ़ कर सुनाए।

पहले आदरणीय नादिर अहमद संधू साहिब जो कि मैडीकल के स्टूडैंट हैं उन्हों ने दिल की बीमारीयों के बारे में अपनी खोज प्रस्तुत की।

उन्हों ने बताया कि उन्होंने अपनी रिसर्च कार्डयालोजी की फ़ील्ड में की है।

दिल की बीमारीयों के हवाला से दो ऐसे प्रोटीनज़ को देखा गया है जिनके बारे में विचार है कि उनका दिल की बीमारीयों के आरंभ में बहुत महत्वपूर्ण किरदार है। इन का नाम MIF और SDF-1है।

ये दोनों ख़ून के विभिन्न कोशिकाओं की interaction को modulate करते हैं। ख़ून में red blood cells होते हैं जो जिस्म को ऑक्सीजन ट्रांसपोर्ट करते हैं। यदि उनमें कमी हो जाए तो निमोनिया हो जाता है। उनसे साइज़ में पर्याप्त छोटे platelets होते हैं। ये ख़ून के जम जाने के लिए होते हैं। जब कभी ज़ख़म होता है तो ये ख़ून को गाढ़ा कर के जमा देते हैं और इस से ख़ून का बहाओ रुक जाता है। इस के अतिरिक्त monocytes होते हैं।यदि जिस्म में बैक्टीरिया दाख़िल हो जाए या कोई कोशिका ख़राब हो तो ये अपना काम शुरू करते हैं और उन सबको ख़त्म करते हुए ख़ून को साफ़ कर देते हैं। इन समस्त कोशिकाओं की interaction को क़ायम रखने के लिए विभिन्न प्रोटीनज़ उपस्थित होते हैं और उनमें MIF और SDF भी शामिल हैं।

पश्चिमी देशों में सब से ज़्यादा मृत्यु दिल की बीमारीयों के कारण से होती हैं। इन में जिस्म की रगों में अर्थात कोशिकाओं में चर्बी जमा होने से वे ख़राब होने लगती हैं और आहिस्ता-आहिस्ता ख़ून का बहाओ बिल्कुल रुक जाता है। अब यदि यह दिल की कोशिका हो तो दिल की यात्रा हो सकता है और यदि ये दिमाग़ की कोशिका हो तो फ़ालिज हो सकता है। अब इसका का निरीक्षण step by step कर लेते हैं। यदि किसी कोशिका की दीवार का कुछ हिस्सा टूट जाए तो गुज़रते हुए platelets वहां जमा हो जाते हैं। ख़ून की नालीयों के ख़राब होने की विभिन्न कारण में से एक उनमें fats(चर्बी) का बढ़ जाना है जो शूगर और सिगरेट नोशी से होती है। अब platelets ख़राब नाली की दीवार के पास जमा हो कर इस सुराख़ को बंद करने का प्रयास करते हैं और अपने अंदर से कई प्रोटीनज़ निकालते हैं जो उन्होंने पहले से स्टोर की होती हैं।

इस कर्म के इस monocytes हमारे platelets की ओर अपना रुख करते हैं और migration शुरू होती है। अब ये सारा कुछ ख़ून की नाली की दीवार के अंदर चला जाता है और उसी समय जो monocytes हैं वे macrophages में तब्दील हो जाते हैं और ये platelets और fat को खा कर foam cells बन जाते हैं जो अपने अंदर चर्बी जमा कर लेते हैं और जितनी ज़्यादा चर्बी होगी ये भी साइज़ में इतने ही मोटे होंगे और ख़ून की नाली को और अधिक तंग कर देते हैं। इस सारे कर्म में सबसे बड़ा नुक़्सान यह होता है कि ख़ून का बहाव प्रभावित होता है

(शेष आगे .....)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

ज्ञान रखने वाला कमज़ोर इन्सान कहाँ तक सोच-सोच कर ख़ुराक और पानी का प्रयोग किया करे। मेरे निकट तो इस्तिग़फ़ार से बढ़कर कोई तावीज़ तथा बचाव और कोई सावधानी तथा दवा नहीं। मैं तो अपने दोस्तों को कहता हूँ कि ख़ुदा से सुलह तथा प्रेम पैदा करो और दुआओं में लीन रहो"

एक हदीस का मतलब

फ़रमाया:" मैं तो बड़ी इच्छा रखता हूँ और दुआएं करता हूँ कि मेरे दोस्तों की उमरें लंबी हों ताकि इस हदीस की ख़बर पूरी की जाए जिस में लिखा है कि मसीह मौऊद के युग में चालीस वर्ष तक मौत दुनिया से उठ जाएगी ",फ़रमाया "इसका अर्थ यह तो नहीं हो सकता कि समस्त जीवितों से उस समय में मौत का प्याला टल जाए।" इस का अर्थ यह है कि उनमें जो लोगों के लिए भलाई वाले और काम के आदमी होंगे अल्लाह तआला उनकी ज़िन्दगी में बरकत प्रदान करेगा।"

10 जुलाई 1899 ई से पहले

"मुझे ख़ूब याद है कि जिस दिन ज़िला सुपरंटंडनट साहिब कादियान में हज़रत के मकान की तलाशी के लिए आए थे और समय से पहले उसकी कोई सूचना और ख़बर न थी और न हो सकती थी।

अल्लाह तआला अपने भेजे हुओं का अपमान पसन्द नहीं करता

इस की सुबह को कहीं से हमारे मीर साहिब ने सुन लिया कि आज हथकड़ी सहित आएगा। मीर साहिब परेशान होकर हज़रत को इस की ख़बर करने अंदर दौड़े गए और रिक़्क़त की अधिकता के कारण से बहुत मुश्किल से इस अप्रिय ख़बर को सुनाया। हज़रत उस वक़्त नूरुल क़ुरआन लिख रहे थे और बड़ा ही सूक्ष्म और गूढ़ विषय सम्मुख था। सिर उठा कर और मुस्कुरा कर कहा कि:

"मीर साहिब ! लोग दुनिया की ख़ुशियों में चांदी, सोने के कंगन पहना ही करते हैं। हम समझ लेंगे कि हमने अल्लाह तआला की राह में लोहे के कंगन पहन लिए।" फिर थोड़ा सा रुकने के बाद फ़रमाया।" परन्तु ऐसा न होगा,क्योंकि ख़ुदा तआला की अपनी गर्वनमेंट के भेद होते हैं वह अपने भेजे हुए ख़लीफाओं का ऐसा अपमान पसन्द नहीं करता।"

समाप्त होने वाला हफ़्ता 10 जुलाई 1899 ई

एक धार्मिक ख़ुशख़बरी पर अत्याधिक प्रसन्नता

इस सप्ताह में जो सबसे अजीब और दिलचस्प बात घटित हुई और जिसने हमारे ईमानों को बड़ी दृढ़ता प्रदान की वह एक चिट्ठी का हज़रत के नाम आना था। इस में दृढ़ सबूत और विस्तार से लिखा है कि जलालाबाद (क़ाबुल)के इलाक़े में यूज़ आसिफ़ नबी का चबूतरा मौजूद है और वहां मशहूर है कि दो हज़ार बरस हुए कि यह नबी शाम से यहां आया था और सरकार काबुल की तरफ़ से कुछ जागीर भी इस चबूतरे के नाम है। अधिक विस्तार का अवसर नहीं। इस ख़त से हज़रत अक़दस इतने प्रसन्न हुए फ़रमाया:

"अल्लाह तआला गवाह और अलीम(ज्ञाता) है कि यदि मुझे कोई करोड़ों रुपए ला देता तो मैं कभी इतना ख़ुश न होता जैसा इस ख़त ने मुझे ख़ुशी प्रदान की है।"

भाइयो! धार्मिक बात पर यह ख़ुशी क्या अल्लाह तआला की तरफ से होने का निशान नहीं? कौन है जो आज अल्लाह तआला की बातों के पूरा होने पर ऐसी ख़ुशी करे?

एक रोया और उसका अर्थ

हमारे ईमान की दृढ़ता तथा नवीनीकरण के लिए एक निशान यह ज़ाहिर हुआ कि ज़ुहर के समय अचानक यह ख़त आता है और सुबह हज़रत अक़दस यह रोया होती है कि सम्मान्नीय केसरा हिंद सलमहल्लाह तआला मानो हज़रत अक़दस के घर में पधारी हुई हैं। हज़रत अक़दस रोया में विनीत अब्दुल करीम को जो उस वक़्त हुज़ूर अक़्दस के पास बैठा है। फ़रमाते हैं कि हज़रत मलिका मुअज़्ज़मा कमाल स्नेह से हमारे हाँ पधारी हुई हैं और दो दिन निवास फ़रमाया है। उनका कोई शुक्रिया भी अदा करना चाहिए।

इस रोया की तअबीर यह थी कि हज़रत के साथ कोई अल्लाह तआला की सहायता शामिल हुई चाहती है। इसलिए कि हज़रत मलिका मुअज़्ज़मा का मुबारक नाम विक्टोरिया है,जिसके अर्थ हैं। सफल तथा सहायता प्राप्त और इसी तरह चूँकि उस वक़्त हज़रत मलिका मुअज़्ज़मा समस्त धरती के बादशाहों में सबसे अधिक सफल और ख़ुशनसीब हैं,इस लिए आपका मेहरबानी के लिबास में आपके मकान में तशरीफ़ लाना बड़ी बरकत तथा सफलता का निशान है। ख़ुदा का इल्म तथा सामर्थ्य देखिए। ज़ुहर के वक़्त इस रोया की सही ताबीर पूरी हो गई। अल्लाह!

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 29 April 2021 Issue No.17

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

अल्लाह इससे ज़्यादा सहायता क्या है कि ऐसे सामान मिल रहे हैं कि जिनसे दुनिया के समस्त इसाइयों पर ख़ुदा की रोशन हुज्जत पूरी होती है

मसीह मौऊद का मिशन

हज़रत मसीह मौऊद ने फ़रमाया। "मैं हैरान होता हूँ कि उनका काल्पनिक मसीह और क्या काम करता या करेगा? उस की ज़िन्दगी के कामों पर नज़र करें तो यही पता चलता है कि दिन का एक भाग तो लक्कड़ी या लोहे या पीतल या सोने चांदी की सलीबों के तोड़ने में व्यतीत करेगा और एक हिस्सा सुअरों के क़तल करने में व्यतीत करेगा। बस यही कि कुछ और भी? "फ़रमाया। "ये लोग नहीं सोचते कि वह बात क्या हो जिससे इतने करोड़ इसाई पर सच्चाई की हुज्जत पूरी हो क्योंकि यदि केवल तलवार हो तो वह तो हक़ को फैलाने के लिए कभी हथियार बन नहीं सकती। क्या ईमान कभी कठोरता से दिलों में उतर सकता और हुज्जत अल्लाह ज़बरदस्ती से किसी के दिल को जीत सकती है? वह तो और भी आरोप का कारण है कि उन लोगों के हाथ में केवल लठम लट्ठा होने के दलील कोई नहीं ।" फ़रमाया। "आगे थोड़ा और अकारण इल्ज़ाम लगाते हैं कि इस्लाम केवल तलवार से फैलाया गया और अब यूं उसे सच्चा कर देना चाहते हैं और मामूली करामतों तथा चमत्कार से भी यूरोप तथा अन्य इसाइयों पर प्रभाव नहीं पड़ सकता, इस लिए कि उनमें लिखा है कि बहुत से झूटे नबी आएँगे जो निशान दिखाएँगे। फिर अब क्या है इस के अतिरिक्त कोई ऐसी हुज्जत प्रकट हो जिसके आगे गर्दनें झुक जाएं और वह वही राह है जो ख़ुदा मेरे हाथ से पूरी करेगा।

मामूर से मुक़ाबला के तीन मार्ग

इस सप्ताह में लाहौर के मुलहम साहिब का ख़त आया जिस में उन्होंने हज़रत अक़दस और आपके के विरुद्ध एक दो भविष्यवाणियां की थीं। इसके बारे में आप फ़रमाया

"अल्लाह तआला जानता है कि इन लोगों की सहानुभूति के लिए कितना मेरे दिल में तड़प और जोश है और मैं हैरान हूँ कि किस तरह उन लोगों को समझाऊँ। ये लोग किसी तरह भी मुक़ाबला में नहीं आते। तीन ही मार्ग हैं या पिछले ज़माना के निशानों से मेरे अपने निशानों का मुक़ाबला कर लें या भविष्य में निशानों में मुक़ाबला कर लें या और नहीं तो यही दुआ करें कि जिसका वजूद लोगों के लिए लाभदायक है वह अल्लाह तआला के वादा وَاَمَّا مَا يَنۡفَعُ النَّاسَ فَيَمۡكُثُ فِى الۡاَرۡضِ (अर्रअद:18) लम्बी ज़िन्दगी पाए। फिर स्पष्ट हो जाएगा कि ख़ुदा की दृष्टि में कौन मक़बूल तथा स्वीकार्य है।" फ़रमाया

ख़ुदाई इलहाम का स्तर

"अफ़सोस ये लोग छोटे छोटे मामूली इल्हामी टुकड़ों और ख़्वाबों पर भरोसा किए बैठे हैं और समझ नहीं सकते कि किसी इल्हाम के ख़ुदा की तरफ़ से होने और शैतान के दख़ल से पवित्र होने का स्तर क्या है? स्तर यही है कि उस (ख़ुदाई इलहाम)के साथ अल्लाह तआला की सहायता हो और इक़तिदारी ग़ैब के ज्ञान और क़ाहिर भविष्यवाणी उसके साथ हो; वर्ना वे व्यर्थ बातें हैं जो लोगों के लिए लाभदायक नहीं हो सकतीं।" फ़रमाया।"यदि कोई व्यक्ति किसी जलसा के वक़्त दूर बैठा हुआ किसी महान बादशाह की बातें साधारण रूप से सुन ले और आकर कहे कि मैंने अमुक़ बादशाह की बातें सुनी हैं तो इससे उसे और दूसरों को क्या प्राप्त? बादशाह का सानिध्य प्राप्त करने के बाद की बातों के चिन्ह और ही हुआ करते हैं। जिन्हें देखकर एक संसार पुकार उठता है कि अमुक़ सच में बादशाह का कलाम तथा सलाम का पात्र है।" फ़रमाया।"यदि मेरे इल्हामों भी वैसे ही मामूली और व्यर्थ टुकड़े होते और हर एक में ग़ैब का ज्ञान और इक़तिदारी भविष्यवाणियां न होतीं तो मैं उन्हें केवल तुच्छ समझता।" फ़रमाया। "भला कोई लेखराम वाली भविष्यवाणी के बराबर कोई एक ही इल्हाम बताए।" फ़रमाया।"मेरे इलहामों से क़ौम का लाभ और इस्लाम का लाभ होता है और यही स्तर बड़ा भारी स्तर है जो उनके अल्लाह तआला की तरह होने पर प्रमाण करता है।" फ़रमाया "मेरे साथ ख़ुदा तआला के मामले और कार्य और इसके निशान मेरे समर्थन में अदभुत हैं कुछ तो मेरी हस्ती के बारे में हैं। कुछ मेरी औलाद के बारे में हैं और कुछ मेरे अहल-ए-बैअत के बारे में हैं और कुछ दोस्तों के बारे में हैं और कुछ विरोधियों के बारे में हैं और कुछ साधारण लोगों के बारे में हैं.....

लाहौरी मुलहम के सम्मानीय दोस्तों में से एक हाफ़िज़ साहिब का पैग़ाम पहुंचा कि वह पिछले निशानों को बेपरवाही से देखते हैं और उनका हवाला सुनना नहीं चाहते थे। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया

बार-बार मिलने की नसीहत

अफ़सोस ये लोग नहीं समझते कि ख़ुदा तआला की कोई बात भी असम्मान के योग्य नहीं होती। एक क़ौम को क्या पहले भी अल्लाह तआला ने यह नहीं कहा

اَوَلَمۡ يَكۡفِهِمۡ اَنَّاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلَيۡكَ الۡكِتٰبَ يُتۡلٰى عَلَيۡهِمۡ

(अल-अनकबूत :52) क्या यह पिछले निशानों का हवाला नहीं।" फ़रमाया- ।"अब ऐसा वक़्त है कि हमारे दोस्तों को चाहिए कि बहुत बार मुलाक़ात किया करें तो नए नए निशानों को देखने से जो दिन प्रतिदिन नाज़िल होते हैं उन के ईमान तथा तकवा में उन्नति हो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 284 से 289 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

पुस्तक में मूसा की यात्राओं के जो हालात दर्ज हैं मसीही मुहक़्क़िक़ीन ख़ुद उनकी सेहत के क़ायल नहीं और भूगोल और इस ज़माना की दूसरी तारीख़ों से और ख़ुद बाइबल की अंदरूनी गवाहियों से उन हालात को ख़िलाफ़ घनाएं ज़ाहिर करते हैं। ऐसी किताब की रिवायत पर क़ुरआन-ए-करीम पर आपत्ति क़ाबिल ताज्जुब है। हम नि:संदेह बाइबल की कुछ रिवायत को तारीख़ी गवाहियों के तौर पर नक़ल करते हैं लेकिन उसी वक़्त जबकि वह अक़ल और दूसरी तारीख़ या क़ुरआन-ए-करीम के अनुसार हों अन्यथा बाइबल में इतना हस्तक्षेप हो चुका है कि इस की तारीख़ भी सुरक्षित नहीं कही जा सकती। अत: इन हालात में बाइबल की गवाही पर क़ुरआन-ए-करीम पर कोई आपत्ति नहीं की जा सकती जिसके यहूदी तारीख़ के बताए हुए वाक़ियात उस वक़्त तहक़ीक़ से सही साबित हो रहे हैं जबकि यहूदी तारीख़ के वर्णन ग़लत साबित हो रहे हैं। उदाहरण के लिए हारून का बछड़ों को पूजना। मूसा के फ़िरोन की लाश का महफ़ूज़ रहना इत्यादि।

लेकिन यदि हम इस बारे में तौरेत के वर्णन को सही समझ लें तो भी कोई आपत्ति नहीं । इस लिए कि क़ुरआन-ए-करीम ने كَبِيۡرُهُمۡ कहा है اَكۡبَرُهُمۡ नहीं कहा। बारह बेटों में से चौथा बेटा भी नि:संदेह कबीर कहला सकता है। क्योंकि कबीर के माने केवल बड़े के हैं न कि सबसे बड़े के। इसके अतिरिक्त इस प्रकार भी बाइबल के वर्णन और क़ुरआन-ए-मजीद के वर्णन में समानता दी जा सकती है कि कबीर से मुराद आयु में बड़ा न लिया जाएं बल्कि पद में बड़े के लिए जाएं। इस लिए आयत قَالَ لَنۡ اُرۡسِلَهٗ مَعَكُمۡ الخ के अधीन मैं साबित कर आया हूँ कि हज़रत याक़ूब को जो विश्वास यहूदा पर था रोबिन पर नहीं था। बिन यामीन को उन्होंने भेजा भी यहूदा की ज़मानत पर था। अत: इस मुआमला में यहूदा ही सबसे बड़े थे।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 3 पृष्ठ 346 प्रकाशन क़ादियान 2010)

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad